रुचि त्रिवेदी 6 वर्ष, भोपाल

चकमक बाल विज्ञान पत्रिका
भाग 2 अंक 11 मई, 1987

विनोद रायना
संपादक मंडल:
राजेश उत्साही, निशा व्यास
हरगोविंद राय, गोपाल राठी
कला:
जया विवेक
उत्पादन/वितरण:
हिमांशु बिस्वास, कमलसिंह
संपादकीय परामर्श:
रेक्स

चकमक का चंदा
छमाही: 15 रुपए
वार्षिक: 30 रुपए
डाक खर्च मुफ्त
चंदा, मनी आर्डर या बैंक ड्राफ्ट से एकलव्य के नाम पर भेजें।
कृपया चेक न भेजें।

पत्र/चंदा/रचना भेजने का पता-
एकलव्य
ई-1/208, *अरेरा कालोनी*
भोपाल 462016 *(म.प्र.)*

थोड़ा मेरे लिए भी रहने दे ...!

छाया : शिवजी, बीकानेर

इस अंक में

2	पाठक लिखते हैं	मेरा पन्ना	18
4	चकमक दोस्त	चित्र ही चित्र	20
6	जय शनि महाराज!	कविता : गर्मी	23
10	मेरा पन्ना	सवालीराम	24
11	पैर की कहानी	माथा पच्ची	26
14	अंधविश्वास	अपनी प्रयोगशाला	28
16	मेरा पन्ना	खेल	30
17	कविता : मेरी शाला है चिड़ियाघर	आश्चर्य लोक में एलिस	31

आवरण : शनि के तीन रूप
'शनि महाराज' के छाया चित्र : संजीव दत्ता

एकलव्य एक स्वैच्छिक संस्था है जो शिक्षा, जनविज्ञान एवं अन्य क्षेत्रों में कार्यरत है। चकमक, एकलव्य द्वारा प्रकाशित अव्यवसायिक पत्रिका है। चकमक का उद्देश्य बच्चों की स्वाभाविक अभिव्यक्ति, कल्पनाशीलता, कौशल और सोच को स्थानीय परिवेश में विकसित करना है।

रुचि त्रिवेदी 6 वर्ष, भोपाल

चकमक बाल विज्ञान पत्रिका
भाग 2 अंक 11 मई, 1987
संपादक:
विनोद रायना
संपादक मंडल:
राजेश उत्साही, निशा व्यास
हरगोविंद राय, गोपाल राठी
कला:
जया विवेक
उत्पादन/वितरण:
हिमांशु बिस्वास, कमलसिंह
संपादकीय परामर्श:
रेक्स

चकमक का चंदा
छमाही: 15 रुपए
वार्षिक: 30 रुपए
डाक खर्च मुफ्त
चंदा, मनी आर्डर या बैंक ड्राफ्ट से एकलव्य के नाम पर भेजें।
कृपया चेक न भेजें।

पत्र/चंदा/रचना भेजने का पता-
एकलव्य
ई-1/208, अरेरा कालोनी
भोपाल 462016 (म.प्र.)

थोड़ा मेरे लिए भी रहने दे ...!

छाया : शिवजी, बीकानेर

इस अंक में

2	पाठक लिखते हैं	मेरा पन्ना	18
4	चकमक दोस्त	चित्र ही चित्र	20
6	जय शनि महाराज!	कविता : गर्मी	23
10	मेरा पन्ना	सवालीराम	24
11	पैर की कहानी	माथा पच्ची	26
14	अंधविश्वास	अपनी प्रयोगशाला	28
16	मेरा पन्ना	खेल	30
17	कविता : मेरी शाला है चिड़ियाघर	आश्चर्य लोक में एलिस	31

आवरण : शनि के तीन रूप
'शनि महाराज' के छाया चित्र : संजीव दत्ता

एकलव्य एक स्वैच्छिक संस्था है जो शिक्षा, जनविज्ञान एवं अन्य क्षेत्रों में कार्यरत है। चकमक, एकलव्य द्वारा प्रकाशित अव्यवसायिक पत्रिका है। चकमक का उद्देश्य बच्चों की स्वाभाविक अभिव्यक्ति, कल्पनाशीलता, कौशल और सोच को स्थानीय परिवेश में विकसित करना है।

पाठक लिखते

'चकमक' नन्हे-मुन्ने बालकों के लिए ज्ञानवर्धन, मनोरंजन एवं अभिव्यक्ति का एक बहुमूल्य खजाना है। कक्षा दो के बालक भी पत्रिका को रुचि के साथ पढ़ते हैं यह 'चकमक' की भाषाई सरलता व आकर्षण का अनुपम उदाहरण है। पत्रिका से बालकों को सीखने, समझने व कुछ कर दिखाने की प्रेरणा मिलती है।

माह मार्च, 87 का अंक पिछले सभी अंकों में श्रेष्ठ रहा है। 'आश्चर्य लोक में एलिस' धारावाहिक बालकों के मनोरंजन एवं ज्ञानवर्धन के लिए निःसंदेह उपयोगी सिद्ध होगा। 'सांपों का संसार' में सर्प विषयक उपयोगी जानकारी दी गई है। स्वास्थ्य स्तंभ में सांप से बचाव की जानकारी ग्रामीण क्षेत्र के बालकों के लिए अत्यंत ही उपयोगी है। पत्रिका में पहली बार मुखपृष्ठ के चारों पृष्ठों का आकर्षक उपयोग किया गया है। चित्र के द्वारा अंडे में से सर्प शिशु का बाहर निकलना, सर्प द्वारा चूहे का शिकार करना ... बिना समझाए समझने की कला का उत्तम उदाहरण है। सबसे पिछले पृष्ठ पर कोबरा नाग का चित्र अत्यंत ही भयावह है, कृपया ऐसा चित्र न छापें। जब विद्यालय में चकमक आई तो नागराज की आकृति देखकर कुछ क्षणों तक तो पत्रिका ही नहीं खोली! नए विकसित एंटीवीनम सीरम की जानकारी अधूरी है। कृपया इसकी पूरी जानकारी अगले अंकों में दें। 'कल्लू का सांप' कहानी मनोरंजक लगी। लेकिन "कल्लू लंगड़-कल्लू लंगड़" शब्द हमारे अपाहिज भाइयों के लिए उपयुक्त नहीं है। पत्रिका को नन्हे-मुन्ने बालक पढ़ते हैं, उन्हें अपने गांव, मोहल्ले के अपंग अपाहिजों के लिए लंगड़-लंगड़, कनगड़ आदि शब्दों से संबोधन करने की प्रेरणा नहीं देना है। इसके विपरीत उनके प्रति सहानुभूति व कर्त्तव्य का बोध कराना है।

☐ मांगीलाल जोशी
रानीसिंग, रतलाम

सच, प्रस्तुति और उद्देश्य न केवल रोचक है-अपितु सशक्त भी। मुझे नहीं मालूम था कि बच्चों के लिए इतने स्वस्थ दृष्टिकोण वाली एक अनौपचारिक पत्रिका भोपाल से निकल रही है।

अंक के माध्यम से लगा कि बच्चों के समूह में उनका हिस्सा बनकर गोष्ठी कर रहे हैं। स्तर की बजाए बच्चों की नैसर्गिक मौलिकता पर विशेष महत्व देना ही चकमक की विशिष्टता है।

☐ गजेश जैन, दिल्ली

हमारे गांव में पोस्ट आफिस है, मगर उसमें कार्ड, अन्तर्देशीय, टिकट आदि उपलब्ध नहीं रहते हैं। कई बार वहां पोस्ट मास्टर साहब भी नहीं बैठते। ऐसे में बताइए हम चकमक को रचना कैसे भेजें? शासन इस तरफ ध्यान दे।

☐ योगेश मिश्र, टेंगनमड़ा, रायपुर

मैंने मार्च 1987 का अंक पढ़ा। उसमें मुझे "आश्चर्य लोक में एलिस" और 'सांपों का संसार' बहुत अच्छा लगा। इसी अंक में मैंने 'एक मजेदार खेल' पढ़ा और उसे बनाया। जो कि मेरे छोटे भाई को बहुत पसंद आया। आप इसी तरह के सरल खेल चकमक में प्रकाशित किया करें।

☐ विमला वर्मा, भोपाल

जनवरी अंक देखा। इतनी सुंदर, चेतन और चकमक पत्रिका देखकर, पढ़कर बहुत खुशी हुई। यह अंक मैंने सहेजकर रख लिया है। इस अंक के रचनाकार बच्चों का अभिनंदन और बहुत–बहुत प्यार।

☐ अरूण कमल, पटना

पर्यावरण जागरूकता कार्यक्रम

मैं शासकीय पेंचव्हेली उच्चतर माध्यमिक शाला, परासिया जिला छिंदवाड़ा का छात्र हूं। विगत दिनों से हमारी शाला में किशोर भारती एवं एकलव्य फील्ड सेंटर, पिपरिया की ओर से प्रस्तावित पर्यावरण जागरूकता कार्यक्रम चल रहा है।

इस कार्यक्रम के अंतर्गत खदान क्षेत्र परासिया के क्षेत्र में आने वाली शालाओं (जो अधिकतम 3 किलोमीटर के अंदर हैं) से ग्यारहवीं विज्ञान विषय के चार-चार विद्यार्थियों को पर्यावरण संबंधी सामान्य जानकारी दी जा रही है, व अपने पर्यावरण के विशेष पहलू पानी का वैज्ञानिक परीक्षण करना सिखाया जा रहा है। हम विद्यार्थियों को प्रतिमाह एक निश्चित दिन पानी के विभिन्न स्त्रोतों से नमूने एकत्र कर उनका परीक्षण करना होता है तथा इसकी पूरी रिपोर्ट तैयार करके देनी होती है। इसके लिए हमें प्रतिमाह 10 घंटे अतिरिक्त लगाने पड़ते हैं।

इस कार्यक्रम की शुरूआत 26 से 30 दिसम्बर, 86 तक आयोजित एक प्रशिक्षण शिविर से हुई। यह मई, 87 तक चलेगा। इस बीच हमें पानी का परीक्षण कर आंकड़े एकत्र करना है। मई, 87 में एक अन्य शिविर में इन आंकड़ों का विश्लेषण किया जाएगा। और परासिया क्षेत्र की पानी की स्थिति पर एक रपट तैयार कर शासन से उचित कार्यवाही के लिए अनुरोध किया जाएगा। चूंकि यह कोयला खदान क्षेत्र है इसलिए यहां का पानी स्वास्थ्य के लिए हानिकारक है।

इस कार्यक्रम में हिस्सा ले रहे छात्रों को प्रोत्साहन स्वरूप 50/- रु. पर्यावरण जागरूकता छात्रवृत्ति दी जा रही है। अगले वर्ष इसी कार्यक्रम के तहत हमें वायु के परीक्षण सिखाए जाएंगे।

☐ मनीष कुमार गंगराडे
परासिया, छिंदवाड़ा

प्रेमचंद की कहानी पर आधारित नाटक 'सवा सेर गेहूं' बालिकाओं से यहां कराया गया, जो काफी अच्छा रहा। आप ऐसे नाटक और दें।

□ दुर्गा गहरवार, शिक्षिका
बिलपांक, रतलाम

मैं आपको एक खुश खबरी सुनाता हूं, मैंने अपने विद्यार्थियों का परिचय चकमक से कराया। मैंने उन्हें चकमक के कुछ पुराने अंक पढ़ने को दिए। उन्होंने वे अंक बड़े चाव से पढ़े। अब वे चकमक के नियमित ग्राहक बनना चाहते हैं। मैं पैसा इकट्ठा करके भेज रहा हूं। पर डाक की गड़बड़ी से ऐसा न हो कि चकमक उन तक न पहुंचे। आप इस तरीके से भेजें कि चकमक रास्ते में न खोए। बच्चों को चकमक से बहुत अपनापन है। चकमक की वजह से यहां के बच्चों के लिए भोपाल और धनबाद में दूरी नहीं रही है। आशा है कि देश के कोने-कोने के विद्यार्थियों के लिए भी ऐसा ही होगा।

□ रॉबिन मुकर्जी, धनबाद

फरवरी अंक में 'छुक छुक रेलगाड़ी' का लेख एवं चित्र बहुत अच्छे लगे। चितावर नाटक को बहुत ही अच्छा लगा, ये अंधविश्वास न मानने के लिए एक प्रेरणा है। पत्रिका स्कूल में आती है और सभी बच्चों को पढ़ने के लिए मिल जाती है।

□ चन्द्रशेखर तिवारी
भरारी, बिलासपुर

चितावर नाटक की तरह और नाटक देंगे, तो ग्रामों में अंधविश्वास दूर करने में मदद मिलेगी।

□ राजेश गुप्ता, सालोन
ग्वालियर, भुवनेश्वर साहू,
चंदामारा, रायपुर

यज्ञ : बहस जारी है

यज्ञ में जलने वाले सभी पदार्थ, कार्बनिक पदार्थ होते हैं जैसे, तिल, जौ, चावल, घी, शक्कर, लकड़ी आदि। कार्बनिक पदार्थ जलने पर कार्बन डाय आक्साइड गैस का निर्माण करते हैं इसके साथ ही कुछ मात्रा में कार्बन मोनो आक्साइड गैस भी तैयार होती है। दोनों गैसों की मात्रा वातावरण में बढ़ जाती है, इससे प्राणियों को श्वसन में प्राप्त होने वाली वायु में इन गैसों की अधिक मात्रा लेनी पड़ती है।

यह निर्विवाद एवं सत्य है कि यज्ञ/हवन में वायु शुद्ध करने वाली गैसें (आक्सीजन या ओजोन) उत्पन्न नहीं होती हैं। अतः वायु शुद्धिकरण का प्रश्न ही नहीं उठता।

वास्तव में यज्ञ से धार्मिक विचारों की विशेष रूप से प्राणियों के प्रति दया का, सदाचार का नैतिकता का वातावरण तैयार होता है, इस तरह मानसिक प्रदूषण दूर होता है। यही यज्ञों का उद्देश्य है। प्रश्न यह है कि कभी-कभी यज्ञों का सीमित उद्देश्य से आयोजन किया जाता है जिनके बारे में शंकाएं उत्पन्न होती हैं।

□ व्ही. व्ही. दवे, प्राचार्य
चितरंगी, सीधी

आम धार्मिक पुस्तकों में अवश्य लिखा है कि वातावरण शुद्धि हेतु यज्ञ करें। परंतु जैसे-जैसे धार्मिक सत्ता अनाधिकारी लोगों को हस्तांतरित होती गई वैसे-वैसे शुद्ध तरीके से यज्ञ करना बंद हो गया। फलतः यज्ञों में वातावरण शुद्ध करने की शक्ति क्षीण होती गई।

यज्ञ के साथ अनेक प्रश्न भी जुड़े हैं। एक, हमें पैसा चाहिए नहीं तो हम खाएंगे क्या? दो, हमें मान-सम्मान चाहिए नहीं तो हमें पूछेगा कौन? तीन, हमें ठाट-बाट चाहिए नहीं तो हम जीवित कैसे रहेंगे?

जबकि शुद्ध तरीके से यज्ञ करने के लिए अनाप-शनाप पैसा नहीं चाहिए। शेष दोनों बातें भी नहीं चाहिए इसलिए सही और शुद्ध तरीके से यज्ञ करने में लोग कतराते हैं।

यज्ञों पर परीक्षण होने चाहिए यदि वातावरण शुद्ध करते हैं तो ठीक, नहीं करते है तो, ऐसे यज्ञों को बंद कर देना चाहिए। मेरी समझ से तो इस प्रकार के यज्ञ वातावरण शुद्ध नहीं करते, क्योंकि उनका फल हमें कुछ मिलता दिखाई नहीं देता।

□ अरूण साहू, शिक्षक
मलगंवा, टीकमगढ़

यदि हम धार्मिक कार्यों के प्रति ऐसी धारणा बना लें कि वे सभी अनुपयोगी, अंधविश्वास एवं रूढ़िवादिता के प्रतीक हैं, तो यह परिष्कृत दृष्टिकोण नहीं हुआ। यह कहना कि 'यज्ञ से वायु प्रदूषण दूर किया जा सकता है' पर इसलिए विश्वास नहीं किया जाए क्योंकि वह धार्मिक रूढ़िवादिता का प्रतीक है। क्या इस पर कोई वैज्ञानिक तथ्य नहीं है।

इस संबंध में आधुनिक वैज्ञानिकों विचारकों की राय जाननी है तो अखण्ड ज्योति मासिक पत्रिका का अध्ययन किया जाए। यज्ञ से संबंधित ब्रम्हवर्चस शोध संस्थान, हरिद्वार एक ऐसा ही शोध संस्थान है जहां यज्ञ एवं उसके प्रभाव का प्रयोगात्मक स्वरूप प्रस्तुत किया जाता है।

□ लखन लाल काछी, शिक्षक
तनेरा, बिलासपुर

दीपा अग्रवाल, भोपाल

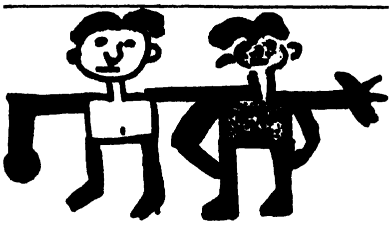

चकमक दोस्त

1. नाम
2. रुचियां
3. पता

1. नासिर मोहम्मद, 18 वर्ष
2. क्रिकेट खेलना, पत्र-मित्रता करना
3. 2/3, सुभाष मार्ग, कुक्षी, धार

1. मोइनुद्दीन शेख अशरफ, 18 वर्ष
2. अच्छी-अच्छी किताबें पढ़ना, दोस्ती करना
3. 45, सुभाष मार्ग, कुक्षी, धार

1. अमित राठौर, 9 वर्ष
2. टी. वी. देखना, पढ़ना, क्रिकेट खेलना, चित्र बनाना
3. जूना बाजार, मक्सी, 465106

1. श्रुति चांदनीवाला, 9 वर्ष
2. रस्सी कूदना, चित्र बनाना
3. 39, तिवारी मार्ग, दौलतगंज, उज्जैन

1. मास्टर सत्यम चांदनीवाला, 8 वर्ष
2. क्रिकेट खेलना, टी. वी. देखना
3. 39, तिवारी मार्ग, दौलतगंज, उज्जैन

1. तोषन लाल साहू, 14 वर्ष
2. खेलना, विज्ञान की किताब पढ़ना
3. धनेली, दुर्ग

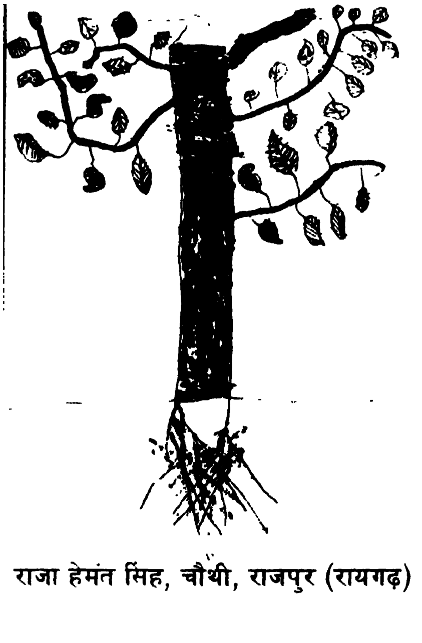

राजा हेमंत सिंह, चौथी, राजपुर (रायगढ़)

1. अमित नेमा, 10 वर्ष
2. शिक्षाप्रद पत्रिका पढ़ना
3. मेख, नरसिंहपुर

1. मुरतजा अली नजर हुसैन, 11 वर्ष
2. बैडमिंटन खेलना, चित्र बनाना
3. नजर हुसैन, फिदा हुसैन, बोहरा मस्जिद, मंडलेश्वर, खरगोन

1. विमला वर्मा, 15 वर्ष
2. चकमक पढ़ना, गाना-गाना, क्रिकेट खेलना
3. डी-3, रिजर्व बैंक स्टाफ क्वार्टर्स, चार इमली, भोपाल

1. सुनील भार्गव
2. पढ़ना, क्रिकेट खेलना, समय पर काम करना
3. मुकाम पोस्ट—मुखत्यारा बड़वाहा (खरगोन)

1. मजहर सैफी, 12 वर्ष
2. क्रिकेट
3. महात्मा गांधी हायर सेकेण्डरी स्कूल मण्डलेश्वर (खरगोन)

1. प्रज्ञा देवी भट्ट
2. चकमक पढ़ना, पत्र-मित्रता करना, दूसरों की मदद करना
3. माध्यमिक शाला, सिवनी (मरवाही) बिलासपुर

1. गीता भट्ट, 11 वर्ष
2. समय पर काम करना, चकमक पढ़ना, माथा पच्ची हल करना,
3. माध्यमिक शाला, सिवनी (मरवाही) बिलासपुर

1. चंद्रशेखर तिवारी, 13 वर्ष
2. चकमक पढ़ना, क्रिकेट खेलना
3. माध्यमिक शाला भरारी, बिलासपुर

1. प्रवीण कुमार रजक 'सोनू' 14 वर्ष
2. पत्र मित्रता करना, क्रिकेट खेलना, ज्यादा सोना
3. टेहरका, टीकमगढ़ (म. प्र.)

1. मोईज हुसैन, 12 वर्ष
2. क्रिकेट खेलना
3. अब्बास अली, अहमद अली, बस स्टैंड के सामने, मण्डलेश्वर, खरगोन

1. रोशन लाल तिवारी, नवमीं
2. फुटबाल खेलना
3. शा. उ. मा. वि. गंज, छतरपुर

1. जीतेन्द्र सिंह चौहान, नवमीं
2. पढ़ना-खेलना
3. शा. उ. मा. वि. गंज, छतरपुर

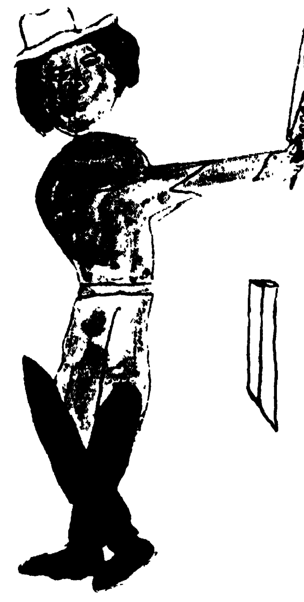

अजय तिवारी, बिलासपुर

1. महेन्द्र प्रताप शुक्ला, नवमीं
2. विज्ञान पढ़ना
3. शा. उ. मा. वि. गंज, छतरपुर

1. अजय भारत तिवारी
2. खेलना-कूदना
3. प्राथमिक शाला, गंज छतरपुर

1. गजेश पोरवाल, 10 वर्ष
2. साइकिल चलाना, खेलना-पढ़ना।
3. प्राथमिक विद्यालय, रीछा जिला—मंदसौर

1. गजेंद्र कुमार माहेश्वरी, आठवीं
2. पढ़ाई करना, सैर करना, खेत में काम करना
3. शा. उ. मा. शा. चकल्दी, सीहोर

1. योगेश गुप्ता, 11 वर्ष
2. चकमक पढ़ना, भाषण प्रतियोगिता में भाग लेना, विज्ञान पढ़ना
3. द्वारा श्री ओमप्रकाश गुप्ता, उपयंत्री मकरोदा परियोजना उपखंड, रामपुर कालोनी, पोस्ट—कालोनी, जिला—गुना

1. गोविंद पोरवाल, 13 वर्ष
2. प्रयोग करना, पढ़ना—लिखना, कबड्डी खेलना
3. माध्यमिक विद्यालय, लसूड़िया राठौर, जिला—मंदसौर

. मोहम्मद रमजान सुलड़ा, 16 वर्ष
2. क्रिकेट खेलना, कमेन्टरी सुनना
3. शासकीय उच्च. मा. शाला, भरींडांड. बिलासपुर

1. अतुल माण्डलीक, आठवीं
2. चित्रकारी, क्रिकेट खेलना
3. मकान नं.18, कटी घाटी, देवास

1. पंकज सिंह सेंगर, आठवीं, 13 वर्ष
2. क्रिकेट खेलना, पढ़ना-लिखना
3. मकान नं. 9, मुक्ति मार्ग गली नं. 1, देवास

1. समीर शेख, आठवीं, 14 वर्ष
2. क्रिकेट खेलना
3. मकान नं. 36, मिर्जा बाखल, देवास

1. मनोज कुमार, आठवीं
2. पुस्तकें पढ़ना, लिखना
3. मकान नं. 42, महात्मा गांधी दवाखाना, देवास

1. मेहरबान सिंह कलोता, आठवीं, 15 वर्ष
2. क्रिकेट खेलना, पढ़ना-लिखना
3. गवली मोहल्ला, देवास

1. हरीश आसोदिया, आठवीं
2. पुस्तकें पढ़ना, क्रिकेट खेलना
3. मकान नं. 62, लक्ष्मीबाई नगर, देवास

1. विनोद वारे, आठवीं, 14 वर्ष
2. क्रिकेट खेलना, पढ़ना-लिखना
3. शांतिपुरा, गली नं 4, देवास

1. नितेश गंगसार, आठवीं
2. पुस्तकें पढ़ना, खेलना
3. मकान नं. 14, रघुनाथपुरा, देवास

1. विनोद कुमार शर्मा, 15 वर्ष
2. क्रिकेट, फुटबाल, व्हालीबाल खेलना, पढ़ना
3. द्वारा—व्ही. आर. शर्मा, ग्राम-पगरा, पोस्ट-परैना, पन्ना

1. मनीष अग्रवाल, 9 वर्ष
2. गणित, शतरंज, पहेलियां पूछना, चित्रकला
3. द्वारा-पृथ्वीराज अग्रवाल, ग्राम-तिरला, धार

1. भगवान दास पांडे, 14 वर्ष, आठवीं
2. क्रिकेट खेलना, बातें बनाना, सायकिल चलाना, खो-खो खेलना, दौड़ना
3. म. गा. शा. उ. मा. वि. मण्डलेश्वर, खरगोन

1. कमलेश मीना, 14 वर्ष
2. बेडमिंटन खेलना, फुटबाल खेलना, पढ़ना
3. शा. मा. वि. पीपलिया कलां, होशंगाबाद

१. रविशंकर सोनी, आठवीं
२. साइकिल चलाना, खेलना, पढ़ना
३. नगर पालिका, मा. शाला. टिमरनी, होशंगाबाद

1. निर्मल वर्मा, नवमीं, 14 वर्ष
2. क्रिकेट खेलना
3. 73 लक्ष्मीबाई मार्ग, देवास

1. राजेश बानीवाल, दसवीं
2. विज्ञान एवं चकमक में, क्रिकेट खेलना
3. हाई स्कूल, कमलापुर, देवास

1. दिनेश चंद्र श्रीवन्त, नवमीं
2. साईकिल चलाना और हंसते रहना
3. शा. उ. मा. वि. कोद, धार

1. शर्मिला तलेरा, 14 वर्ष
2. फिल्में देखना, घूमना
3. 4, नयापुरा, थांदला, झाबुआ

1. रेखा जैन, 14 वर्ष
2. संगीत सुनना, क्रिकेट देखना व चुटकुले सुनाना
3. 27 नयापुरा थांदला, झाबुआ

1 अनिल बिल्लौरे, 11 वर्ष
2 चकमक पढ़ना, क्रिकेट खेलना
3 प्राथमिक शाला बरवारी, पूर्व निमाड़

1. योगेश मिश्र, 13 वर्ष
2 कैरम, शतरंज, क्रिकेट खेलना, चकमक पढ़ना
3 ग्राम/पोस्ट—टेंगनमाड़ा, बिलासपुर

1 अनिल चंदेल, 14 वर्ष
2 कामिक्स पढ़ना, क्रिकेट खेलना
3. पूर्व माध्यमिक शाला, बुंदेली तेंदूभाटा राजनादगाव

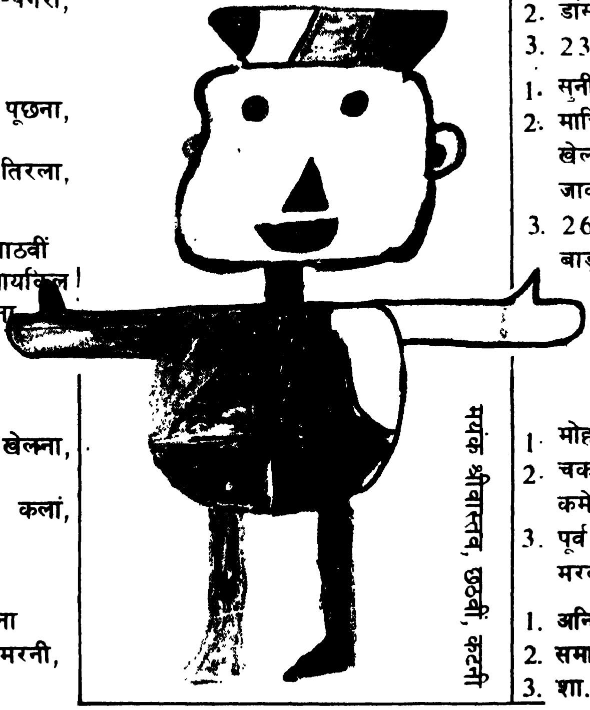
मयंक श्रीवास्तव, छठवीं, कटनी

1. अब्दुल हलीम, 11 वीं
2. चकमक पढ़ना, फुटबाल खेलना
1. राजकुमार वैश्य, 11वीं
2. चकमक पढ़ना, पत्र—मित्रता
1. दिनेश जायसवाल, 11वीं
2. पतंग बाजी
1. मनो देवागंन, 11वीं
2. चित्रकारी, कार्टून बनाना
1. राजेश सोनी, 11वीं
2. साईकिल चलाना
1. महेंद्र सिंह ठाकुर, 11वीं
2. चकमक पढ़ना
1. शमीम मोहम्मद, 11वीं
2. दुकानदारी करना

सबका पता : नगर पालिका उच्चतर माध्यमिक विद्यालय, मुंगेली, बिलासपुर

1. अंजना उपाध्याय, 16 वर्ष
2. पत्र—मित्रता, डाक टिकट संग्रह करना, कविता, कहानी लिखना, दोस्तों को सुंदर ग्रीटिंग भेजना
3. द्वारा श्री कृष्ण प्रसाद उपाध्याय, सतीश का मकान, जनता प्रेस के पास, मनेन्द्रगढ़, सरगुजा

1. निशिकांत चिन्चोलकर, 15 वर्ष
2. प्रयोग करना, क्रिकेट खेलना
3. शा. उच्च. मा. शाला, नवागढ़, दुर्ग

1. सुरेश चंद्र खैर, छटवीं, 13 वर्ष
2. नाराज होना, ऐक्टिंग करना
3. 23, विवेकानंद मार्ग, नौगांव, धार

1. गणेश चंद्र खैर, दसवीं, 18 वर्ष
2. डांस करना, किताबें पढ़ना
3. 23, विवेकानंद मार्ग, नौगांव, धार

1. सुनील गुप्ता, 14 वर्ष
2. माचिस इकट्ठी करना, चकमक खेल खेलना, घूमना—फिरना, बाल मेले में जाकर विज्ञान के प्रयोग करना
3. 26 बड़ा बाजार, ठाकुर प्रतापसिंह का बाड़ा, देवास

1. अनूप वाधवानी, 16 वर्ष
2. पत्र—मित्रता, चकमक पढ़ना
3. मकान नं. 17, पगी बाजार रोड, ईदगाह हिल, भोपाल 462 001

1. मोहम्मद अमीन, आठवीं
2. चकमक पढ़ना, क्रिकेट व हाकी की कमेन्टरी सुनना, भाषण देना,
3. पूर्व माध्यमिक शाला, बंशीलाल, वाया मरवाही (बिलासपुर)

1. अनिल तिवारी, 18 वर्ष
2. समाचार पत्र पढ़ना
3. शा. बा. उ. मा. शा. इटारसी

जय शनि महाराज की।

संयोग की बात है—यह लेख 14 मार्च, 1987 दिन शनिवार को ही लिखा जा रहा है। ऐसा पहले से तय नहीं था। तुम कह सकते हो कि यह तो शनि महाराज की मर्जी है—वे बहुत शक्तिशाली हैं, उन्हें सब पता रहता है, वे शनिवार को ही आपसे यह लेख लिखवा रहे हैं। और तुम क्यों न कहो! ऐसी ही तो है आम राय शनि महाराज के बारे में। अगर मेहरबान हुए तो मालामाल कर देंगे और अगर नाराज हुए तो लुटिया डुबो देंगे। अब हमें नहीं पता कि हमारा क्या होगा?

आश्चर्य की कोई बात नहीं है कि लोग शनि की नाराजगी से इतना डरते हैं। कहीं पंडितजी ने जन्मपत्री देखकर कह दिया कि साढ़े साती शनि हैं या शनि की दृष्टि ठीक नहीं है तो क्या-क्या पापड़ नहीं बेलते लोग :

—काली-चीज का दान जैसे काली गाय, लोहा या उड़द की छिलके वाली दाल
—शनिवार को लोहा या तेल नहीं खरीदेंगे (चाहे घर में छोंक लगाने को भी न हो)
—गोमेद का काला नग अंगूठी में पहनना
—लोहे का छल्ला पहनना, खासकर अगर वह घोड़े की नाल का बना हो, शनिवार को मिला हो या किसी नाव से निकली कील का बना हो (भले ही इसके लिए घोड़े की लात खानी पड़ी हो या नाव से कील चुरानी पड़ी हो)।

भई, हमें तो इतनी ही बातें याद पड़ती हैं। जाहिर है कि हर इलाके में और भी तरीके होंगे शनि महाराज को खुश रखने के (तुम्हें मालूम हों तो लिख भेजो)। शनिवार को शहर क्या, गांव क्या, कहीं भी गलियों में आधी बाल्टी तेल में डूबे शनि महाराज और हमारा पाप और जेब काटने वालों से तो हम सब परिचित हैं।

इस डर और आतंक के केंद्र बिंदु- शनि महाराज आखिर हैं क्या? यह तो एक आम परिचय है कि सूर्य के इर्द-गिर्द घूमते हुए नौ ग्रहों में से एक शनि है। एक जमाना था जब लोगों को केवल छह ग्रहों के बारे में ही पता था। इन छह में से एक सूर्य से सबसे अधिक दूर यानि अंतिम ग्रह शनि ही था। काफी समय बाद पता चला कि शनि के बाद भी तीन और ग्रह हैं। क्या मालूम अंतिम होने के कारण ही शनि को इतना महत्व मिला या कोई और वजह थी। भारत में ही नहीं, और देशों में भी शनि को 'देवता' की पदवी दे दी गई थी।

प्राचीन इटली में शनि को फसल की कटाई का देवता माना जाता था और सेटर्न नाम से जाना जाता था

(शनि ग्रह का अंग्रेजी नाम अभी भी सेटर्न ही है)। इतावली सभ्यता ने इस ग्रह के लिए ठीक हंसिये का चिन्ह ही चुना था ।

शनि के बारे में ऐसी अनेक बातें हमने भी तुम्हारी तरह बचपन में ही सुनी थीं। जब कभी घर का कोई बड़ा-बूढ़ा किसी रात को उंगली उठाए हमें आकाश में शनि दिखाता तो हमें हजारों तारों की तरह एक और तारा दिखता, हां औरों से जरूर कुछ अधिक चमकीला। उस समय तो हमें तारे और ग्रह में फर्क भी नहीं मालूम था। बस, आकाश में रात को जो भी चमकता था वह तारा था, हां चंदा मामा को छोड़कर। यह जरूर याद है कि शनि या मंगल को जब देखते तो कल्पना करने की कोशिश करते थे कि उसमें बैठे एक डरावने आदमी का गुस्से से भरा चेहरा कैसा लगता होगा। उसकी कल्पना करके भय महसूस होता था, पर साथ-ही देखने की जिज्ञासा भी! शायद ठीक वैसे ही जैसे तुममें से कई जलती हुई दियासलाई की लौ को हाथ से छूना भी चाहते हैं और साथ ही मन में जलने का डर भी है। मन करता था अपने चेहरे को हथेलियों में ढककर, उंगलियों की दरार से दबी आंख से देखकर जल्दी से भाग जाएं, ताकि शनि जी को पता ही न चले। पर साथ ही थोड़ी परेशानी भी होती थी, क्योंकि यह बात कूट-कूट कर के मन में भरी गई थी कि देवी-देवताओं को तो सब बातों के बारे में मालूम होता है।

खैर,यह तो गुजरे जमाने की बातें हैं। बचपन से बाहर निकले तो ग्रहों के साथ-साथ शनि के बारे में पढ़ने-लिखने को मिला। इस पढ़ने-लिखने से उस डरावने चेहरे वाले देवता की कल्पना कुछ धुंधलाने लगी। फिर एक ऐसा मौका आया जब आंखों ने कुछ ऐसा देखा कि कल्पना की सारी उड़ानें रद्द हो गई। मौका था-एक छोटी दरबीन से शनि को देखना। इतने सुंदर

दृश्य की तो कभी कल्पना भी नहीं की थी। एक चमकती हुई चकती जिसके इर्द-गिर्द एक चमकता छल्ला! रात भर थोड़ी-थोड़ी देर बाद देखते ही रहे। हालांकि छोटी सी दूरबीन (जो आगरा के कबाड़ी बाजार से अपने ही एक साथी, 'खेल खेल में' वाले अरविंद गुप्ता ने खरीदी थी) को शनि पर टिकाए रखना बहुत ही उलझन का काम था। आवरण पर शनि का जो चित्र है वह इसी दृश्य का है- पर बहुत शक्तिशाली दूरबीन से लिया गया है।

इतना सुंदर दृश्य देखने के बाद जाहिर है कि शनि के बारे में और अधिक जानने की जिज्ञासा उत्पन्न हुई। पता चला कि हमारी जैसी ही छोटी दूरबीन से सन् 1600 के आस पास इटली में गैलिलियो ने शनि को देखा था

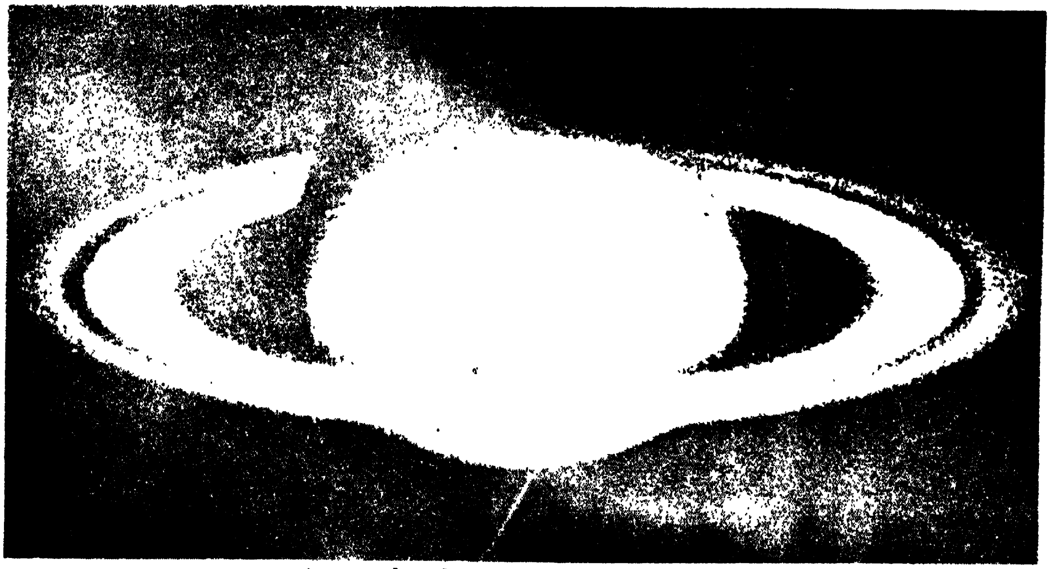

शनि के चित्रों में यह चित्र सबसे अच्छा है। इसे क्यूपर नामक खगोल शास्त्री ने एक 150 सेंटीमीटर व्यास के दूरदर्शी से लिया था। इस चित्र में साफ दिखता है कि वास्तव में शनि के इर्द-गिर्द एक नहीं, दो छल्ले हैं।

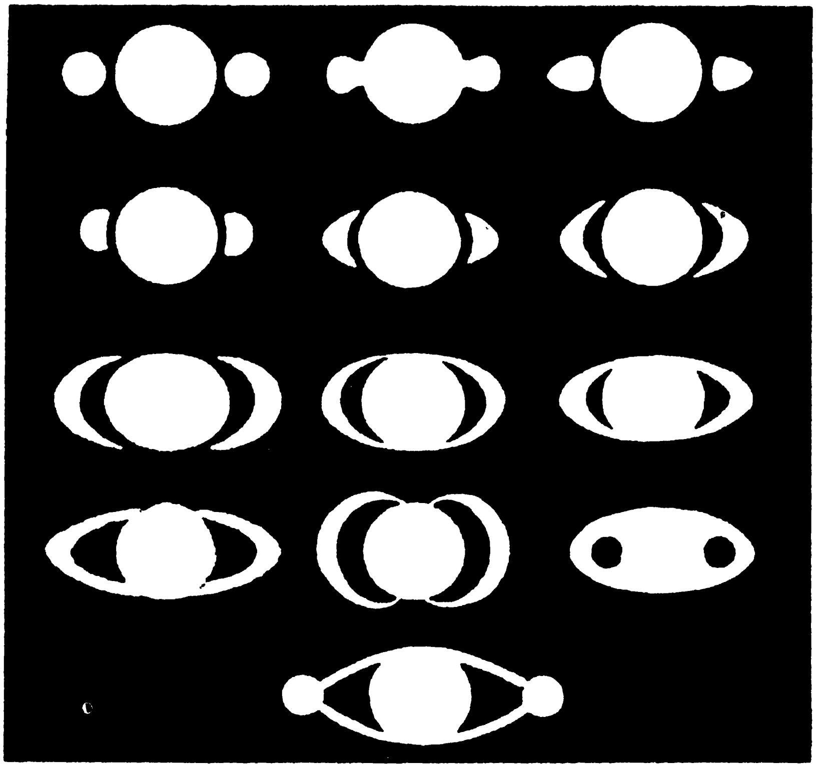

शुरू के दूरदर्शी से देखने वालों के लिए शनि एक रहस्य था। गैलिलियो ने ये चित्र सन् 1600 के आसपास बनाए थे, ऐसा माना जाता है। ये चित्र उन्होंने कई वर्षों के अध्ययन के बाद बनाए थे। पर अगले दो वर्षों में छल्ले दिखना बंद हो गए, क्योंकि शनि की स्थिति वर्ष 1980 (चित्र-नीचे) जैसी हो गई थी।

(इस दूरबीन के लैंस का व्यास 2 इंच है)। तुम्हें शायद याद होगा कि गैलिलियो विश्व में पहले व्यक्ति थे जिन्होंने दूरबीन से आकाशीय पिण्डों को देखना शुरू किया (चकमक दिसम्बर, 86)। लेकिन गैलिलियो बहुत परेशान हो गए। चूंकि शनि की स्थिति बदलती रहती है और इसके इर्द-गिर्द के छल्ले जैसी आकृति भी अलग-अलग दिखती है, इन सबके कई महीनों के अवलोकनों ने उन्हें चकरा दिया। क्योंकि उनकी छोटी दूरबीन से जो उन्हें दिखा वह ऊपर के चित्र जैसा था। इन अवलोकनों से गैलिलियो ने यह (गलत) निष्कर्ष निकाला कि शनि वास्तव में एक ग्रह नहीं बल्कि तीन ग्रह एक साथ हैं। परेशान होकर गैलिलियो ने एक बार यह भी कहा कि ये शनि के 'कान' हैं। सन् 1657 में एक अन्य खगोल शास्त्री, हाईगिन्स ने इन 'कानों' का कारण खोजा, यानि ये वास्तव में छल्ले हैं जो शनि के इर्द-गिर्द हैं।

ये तो थीं सन् 1600 की बातें, जिन्हें कहे-सुने 300-350 साल बीत गए। अब तक तो जानकारियों के अंबार लग चुके हैं। आओ, इन जानकारियों में सेंध लगाते हैं और देखते हैं कि ये हमारे भयंकर शक्तिशाली शनि महाराज के बारे में क्या बताती हैं?

– यह कि शनि ग्रह वास्तव में बहुत बड़ा ग्रह है- इसका आयतन पृथ्वी से 744 गुना है, यानि शनि में 744 पृथ्वियां समा सकती हैं।

– एक विचित्र किंतु मजेदार बात। तुम जानते हो कि पानी में चीजें क्यों तैरती हैं। हर पदार्थ का एक गुण होता है, वह है उसका घनत्व। पानी का घनत्व 1 है। जिस किसी वस्तु का घनत्व पानी से कम है, जैसे लकड़ी, कार्क इत्यादि का, वह पानी में तैरती है। पृथ्वी का घनत्व तुम्हें मालूम है? नहीं? हम बताते

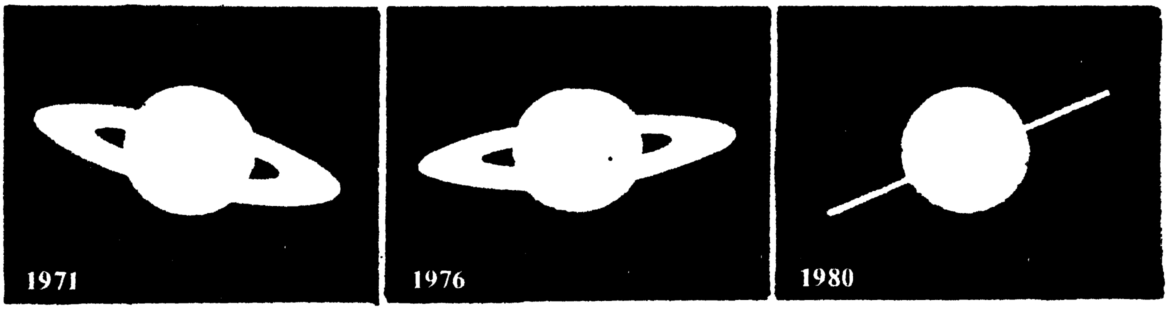

पृथ्वी से शनि हमेशा एक जैसा नहीं दिखता। पिछले वर्षों में वह जैसा दिखा तथा आने वाले वर्षों में जैसा दिखेगा,

हैं- 5.6 है। अब सुनो, शक्तिशाली शनि महाराज का घनत्व पानी से भी कम है यानि 0.71 इसका मतलब यह हुआ कि अगर शनि महाराज किसी विशाल समुद्र में गिर पड़ें तो सतह पर ही तैरते रहेंगे। इस हल्के पन का कारण? वह यह कि शनि मूलत: गैस का एक गोला है, हाइड्रोजन गैस का। - क्या आग और गुस्से वाले शनि महाराज की सतह का तापमान जानना चाहोगे? ० से 150 डिग्री सेल्सियस कम। मतलब, बर्फ से भी खूब ज्यादा ठंडा।

अब बात करते हैं शनि के मुख्य आकर्षण की। वह है इसके इर्द-गिर्द की अंगूठीनुमा रचना। मालूम है यह छल्ला एक छोर से दूसरे छोर तक कितना बड़ा है, यानि इसका व्यास क्या है, सांस रोको और सुनो, 279,000 किलोमीटर। यह दूरी पृथ्वी से चांद तक की दूरी की तीन चौथाई के बराबर है। इतने विशाल छल्ले की मोटाई भी खूब होनी चाहिए थी, लेकिन नहीं मोटाई 10 किलोमीटर से भी कम है।

क्या है आखिर इस विशाल छल्ले में। 1979 में पॉयोनियर अंतरिक्षयान इस छल्ले के बीचों बीच से निकला है और खूब सारी बातें पता कीं। सबसे महत्वपूर्ण यह है कि ये छल्ले पत्थर के टुकड़ों जैसे बर्फीले डल्लों से भरे हुए हैं। मतलब यह कि हमें यहां से दिखने वाले सुंदर छल्ले वास्तव में शनि के इर्द-गिर्द बर्फीले डल्लों से बने हैं। कल्पना करो कि कल किसी कारण से हमारा चंद्रमा लाखों- करोड़ों टुकड़ों में बंट जाए और ये टुकड़े पृथ्वी के इर्द-गिर्द फैलकर चक्कर काटने लगें तो दूर किसी ग्रह से पृथ्वी के चारों तरफ एक छल्ला दिखने लगेगा, वैसा ही जैसा हमें शनि के इर्द-गिर्द दिखता है। अब यह और बारीकी की बात है कि वैज्ञानिकों ने एक नहीं लगभग एक के बाद एक पांच अलग-अलग छल्ले ढूंढे हैं शनि के।

ये छल्ले बने कैसे, किसी को नहीं मालूम। एक मत तो यही है कि शनि के कुछ उपग्रह टूटकर इस रूप में बदल गए होंगे। यह याद रखना कि इन छल्लों के अलावा शनि के 10 और उपग्रह हैं।

शनि का छल्ला कैसे बना, अभी किसी को ठीक से मालूम नहीं है। लगता है कि जैसे कोई टूटा हुआ ग्रह हो। यह जानकारी जरूर है कि यह छल्ला असंख्य बर्फीले टुकड़ों से बना है, जो इतने घने हैं कि प्रकाश भी उनके बीच से नहीं गुजर सकता है।

तो यह थी शनि महाराज की वैज्ञानिक कहानी। अब तक तुम कहीं यह भूल तो नहीं गए कि गैस से बने और छल्लेवाले इसी ग्रह के कारण हमारे देश के कई लोग शनिवार को लोहा और तेल नहीं खरीदते हैं। भला क्या है ऐसी बात जिससे इतना भय है। और जो शनि महाराज के नाम से लोगों में फैलाया जाता है?

हमें तो समझ नहीं आता भई, तुम ही लिखकर समझा दो!

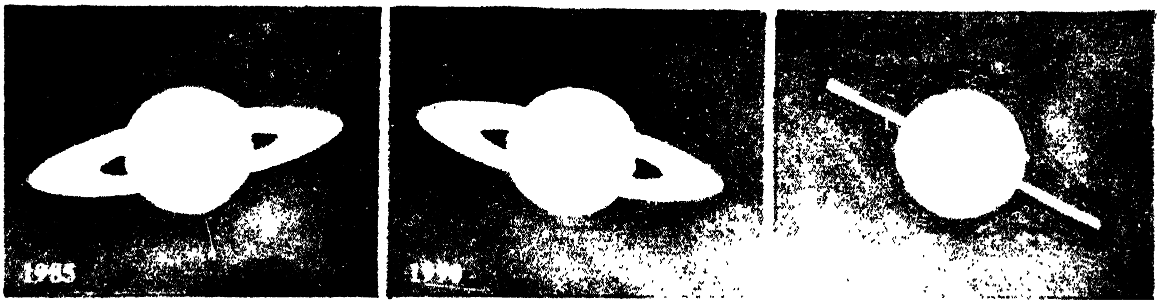

चित्र में दर्शाया गया है। 1980 व 1995 में शनि का छल्ला मानो गायब ही हो गया हो।

साइकिल कीचड़ में फंसी

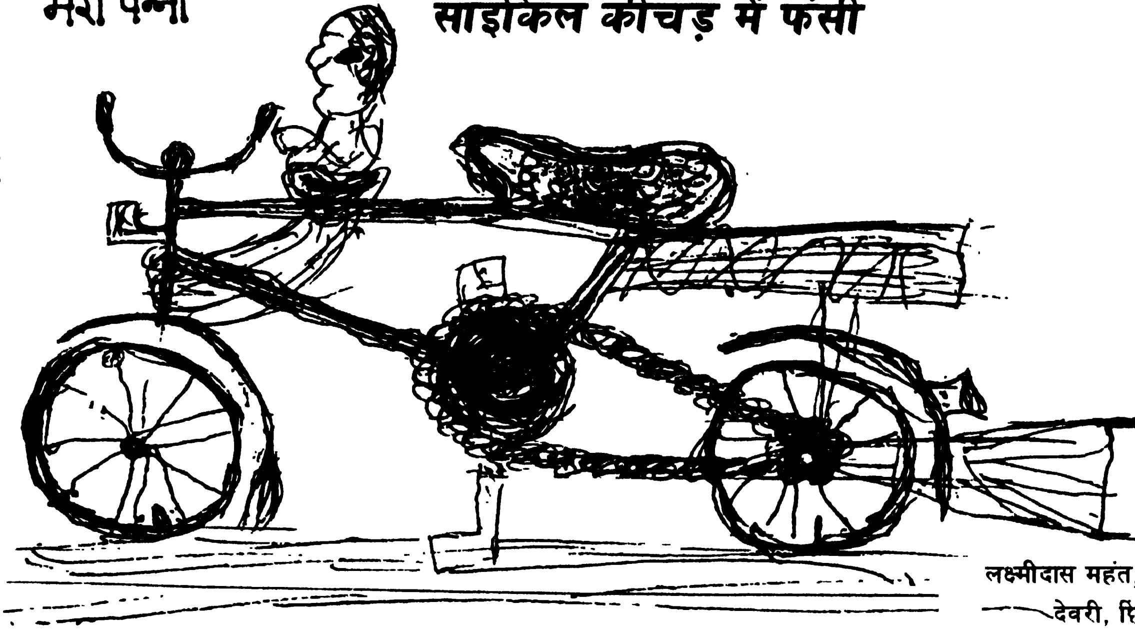

लक्ष्मीदास महंत, छठवीं
देवरी, छिंदवाड़ा

एक बार एक बड़ी मजेदार घटना घटी। सर्दी के साथ-साथ बरसात हो रही थी। सभी घर के सदस्य अपने-अपने काम में व्यस्त थे। थोड़ी-सी वर्षा थमने पर मेरे छोटे भाई सुधू ने रोज की तरह मां से साइकिल चलाने के लिए कहा। आसपास का कीचड़ देखते हुए मां ने मना कर दिया। पर सुधू नहीं माना। वह चुपके से पीछे से साइकिल चलाने निकल पड़ा। बड़ी देर बाद पता चला तो मां परेशान हो गई।

मैं बाहर निकलकर देखने लगी तो अचानक मेरी नजर सुधू पर पड़ी, जो साइकिल पकड़े हुए दूर खड़ा था। मैंने पास जाकर देखा, तब पता चला सुधू साइकिल के साथ कीचड़ में खड़ा है। और आगे भी कीचड़ बहुत ज्यादा है। और सुधू अपनी साइकिल कीचड़ से बाहर नहीं निकाल पा रहा। वह इतनी धसी हुई थी कि उसे मैं भी नहीं निकाल पाती। मैं घर आई और मां को बताया। घर पर और कोई नहीं था जो सुधू को कीचड़ से निकाल पाता।

मैं घर के थोड़ा आगे जाकर देखने लगी, शायद कोई मिल जाए पहचान वाला। वहां से बहुत से लोग निकल गए पर कौन अपने हाथ कीचड़ में खराब करे। तभी वहां से दो आदमी निकले। उनमें से एक सुधू से बात करने लगा। मैं समझी वह सुधू को डांट रहा है। मैं वहां दौड़कर गई। तब तक वह अपने साथ वाले आदमी से बात करने लगा। मैंने सुधू से पूछा, तो सुधू ने बताया कि वह आदमी कह रहा था कि तुम साइकिल को छोड़कर निकल जाओ मैं उसे निकाल दूंगा। इतने में वह आदमी आ गया। उसने कीचड़ से सनी साइकिल उठाई और पूछा, तुम्हारा घर किधर है। मैं आगे-आगे आ गई। वह घर आया, साइकिल नीचे रखी। मैंने पानी लाकर उसके हाथ धुलाए। मां बाहर आई और सुधू को डांटने लगी, तो वह आदमी बोला, "अरे आप मत डांटिए बच्चा है, फिर गलती सबसे होती है। ये तो बाल-गोपाल हैं।"

मां ने उसे धन्यवाद दिया। उसने पूछने पर बताया कि जावरा ग्राम का एक छोटा-सा किसान हूं। फिर वह चला गया शायद उसे जल्दी थी। उसका नाम पूछना मां भूल गईं, इसीलिए मैंने नहीं लिखा।

□ सोनल शर्मा, आठवीं
पिपरिया, होशंगाबाद

पैर की कहानी

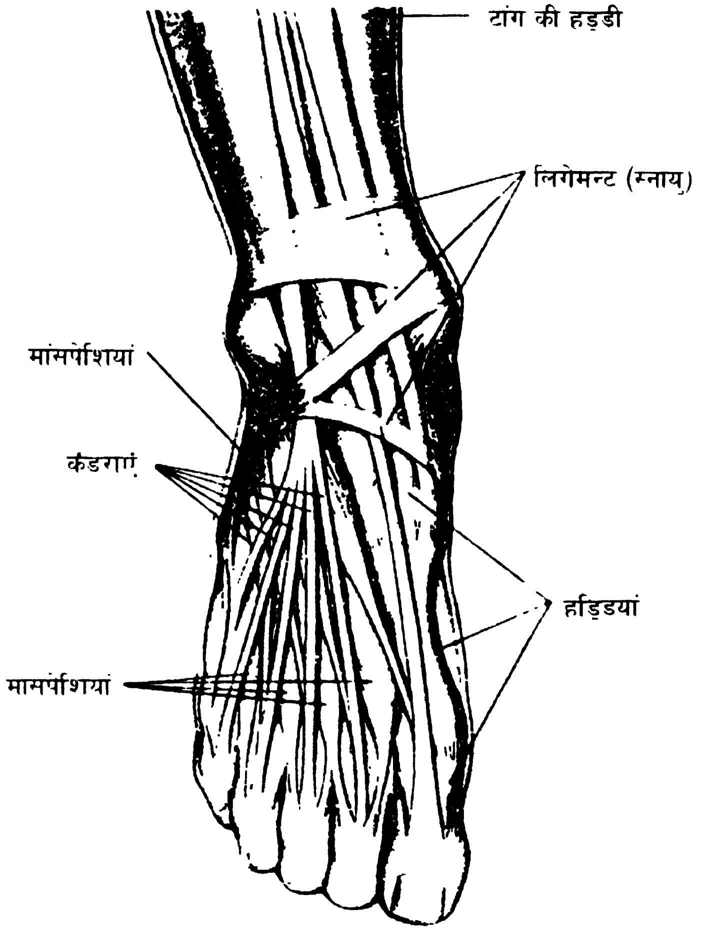

मैं तुम्हारा पैर हूं और मेरी कहानी शिकायतों भरी है। लोग अपने चेहरे को, बालों को संवारने में घंटा-घंटा भर लगाते हैं, या अपने दिल, फेफड़ों या गुर्दों की खूब फिकर करते हैं। लेकिन आमतौर पर मुझे एक बदसूरत और फालतू अंग समझा जाता है। यही कारण है कि बुढ़ापे में उनके पैर जवाब दे जाते हैं और उन्हें कुर्सी या खाट पर अपना शेष जीवन बिताना पड़ता है। तुम यदि मेरी कहानी ध्यान से पढ़ोगे और मेरी उचित देख भाल करोगे तो शायद बुढ़ापे में मजे से रहोगे।

लोगों को बिलकुल अंदाज नहीं है कि मेरी रचना में कितनी जटिलता है। वे तो मुझे बस दो खंबे समझते हैं। लो, वहां खिड़की के पास खड़े और बाहर झांकते हुए सदानंद को देखो। वह क्या आराम से बाहर का नजारा देख रहा है,लेकिन मेरे अंदर बहुत कुछ हो रहा है। मेरी 26 हड्डियों, 19 मांसपेशियों और इन्हें जोड़ने वाले 107 पदार्थ जिन्हें लिगेमन्ट कहते हैं, की बदौलत ही 6 फुट लंबा और 70 किलो वजन का सदानंद आराम से संतुलित रूप से खड़ा है। हां, हां, केवल मेरे और मेरे जुड़वां पैर के कारण ही।

इतने लंबे आकार का ऐसा वजन अगर तुम उतनी ही जगह पर संतुलित कर पाओ, जितनी जगह मेरे तलुए घेरते हैं तो मानूंगा। इतना ही नहीं। दिमाग महोदय मुझे लगातार संदेश भेजते रहते हैं। दबाव महसूस करने वाले संवेदी अंग जो मेरे तलुवों में हैं बता रहे हैं कि एक जगह दबाव बढ़ रहा है—मतलब सदानंद कुछ झुक रहा है। दिमाग से संदेश आता है, इस मांसपेशी को थोड़ा कस लो और उसे ढीला कर दो। मनुष्य को केवल संतुलन बनाए रखने के लिए दिमाग से जितने संदेशों का आदान-प्रदान करना होता है, उन सबको अगर कंप्यूटर से करवाया जाए तो छोटे-मोटे कंप्यूटर हार मान जाएंगे।

चलने की क्रिया तो इससे भी जटिल है। मेरी एड़ी सबसे पहले वजन झेलती है जो फिर मेरी हड्डियों से पंजों तक बांटा जाता है। फिर पंजों में धक्का लगाकर आगे को चलना संभव हो पाता है। यह काम मुझे बहुत

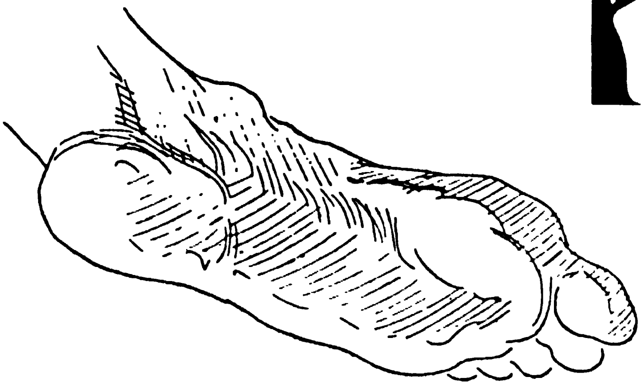

व्यस्त रखता है। लेकिन लोग अक्सर अपनी साइकिल, बैलगाड़ी या अन्य वाहनों का ज्यादा ख्याल रखते हैं। मुझसे काम तो कोल्हू के बैल की तरह लिया जाता है और जब दर्द करने लगता हूं, तो लोग गुस्सा हो उठते हैं। मेरे 'दिल' का दर्द बिलकुल नहीं समझते।

सदानंद को ही लो। मान लें कि वह सड़क पर 100 कदम प्रति मिनट की साधारण चाल से चल रहा है। यानि कि मैं पक्की सड़क पर 70 किलो के धक्के से 50 दफा चोट खा रहा हूं, ऐसे ही मेरा साथी भी पिट रहा है। अपने जीवन में सदानंद लगभग एक लाख किलोमीटर चलेगा, इसका मतलब है कि मुझे करोड़ों ऐसे धक्के खाने होंगे। दौड़ने की चोटें तो अलग रहीं। आश्चर्य की बात तो यह है कि फिर भी मैं जल्दी नहीं थकता हूं।

मेरे तलुए के बीच का भाग उठा हुआ होने से मेरा आकार एक महराब के समान है। शरीर का भार संभालने और संतुलन बनाए रखने के लिए ये महराब बहुत जरूरी हैं। तुमने देखा होगा कि बड़े-बड़े पुल महराबों पर ही टिके होते हैं। कुछ लोगों के पैरों के तलुए महराबदार न होकर सपाट होते हैं। ऐसे लोगों को फौज में भरती नहीं किया जाता। क्या तुम इसका कारण सोच सकते हो?

शरीर का इतना महत्वपूर्ण अंग होते हुए भी न केवल मेरी उपेक्षा की जाती है बल्कि मेरे साथ कई ज्यादतियां भी की जाती हैं। आओ, तुम्हें इनके बारे में बताऊं। आमतौर पर बच्चे जब बहुत छोटे होते हैं और चल-फिर नहीं सकते तब कई माता-पिता हम पैरों को कंबल या चादर में कस कर लपेट देते हैं, जबकि एक नन्हे बच्चे के लिए यह जरूरी होता है कि वह अपने पैरों को और पैरों की उंगलियों को खूब हिलाए-डुलाए। इस तरह मेरा आकार बिगड़ने लगता है। कई बच्चे 6-7 महीने के भी नहीं हो पाते पर उनके परिवार के लोग उन्हें जबरदस्ती चलवाने की कोशिश करते हैं। वे यह नहीं सोचते कि मेरी हड्डियां इतनी कोमल हैं कि वे बच्चे के शरीर का भार नहीं उठा सकतीं, ऐसे में मेरी हड्डियों में कुछ न कुछ खराबी आ जाती है। जब बच्चे चलने लगते हैं तो तंग-ढीले, अच्छे-बुरे जूतों का सिलसिला शुरू हो जाता है। जो लगभग सारी उम्र चलता है। जिस तेजी से तुम्हारे पैर बढ़ते हैं उस तेजी से तुम्हारे जूते नहीं बदले जाते हैं। नतीजा यह होता है कि मेरा आकार बिगड़ जाता है, उंगलियां भिंच जाती हैं और मुझ पर घट्टे पड़ जाते हैं। यह बहुत जरूरी है कि बच्चों को सही नाप के जूते पहनाए जाएं और उन्हें समय-समय पर बदला जाए। मुझे सबसे ज्यादा चिढ़ लड़कियों के ऊंची एड़ी वाले सैंडिलों से है। ऐसे सैंडिल पहनने वाली लड़कियों को आगे जाकर बड़ी परेशानी का सामना करना पड़ता है।

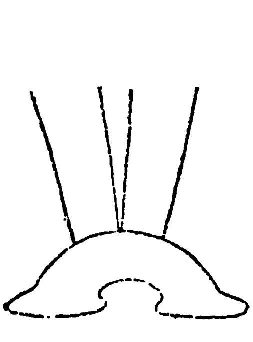

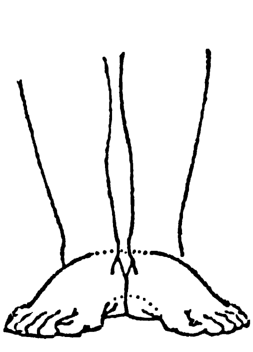

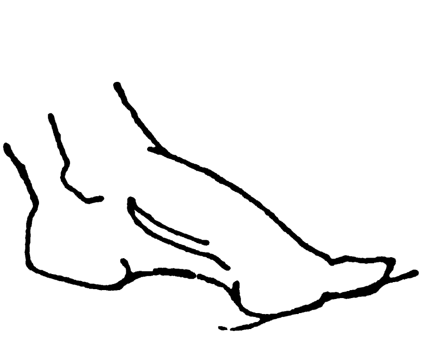

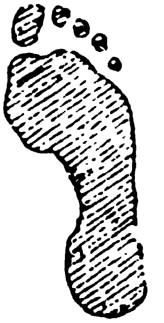

ऐसी सैंडिलों से शरीर का भार पंजों पर आ जाता है, जबकि उसे एड़ी पर होना चाहिए। इसकी वजह से पिंडलियों की पेशियां छोटी हो जाती हैं, रीढ़ की हड्डी टेढ़ी हो जाती है और पैरों तथा पीठ के दर्द की गंभीर समस्या पैदा हो जाती है।

जब तुम कभी खुली चप्पल पहनते हो या कभी-कभी नंगे पैर चलते हो तो मुझे बहुत अच्छा लगता है। मेरे लिए सबसे अच्छी कसरत कुछ देर नंगे पांव चलना है, ऊबड़-खाबड़ जमीन पर। लेकिन यह भी सही है कि बाकी समय जूते-चप्पलें इस्तेमाल करने ही पड़ेंगे। लेकिन अफसोस इस बात का है कि अधिकांश व्यक्तियों को जूता खरीदना ही नहीं आता। लोग कपड़े तथा अन्य चीजें खरीदने में अधिक समय लगाते हैं। अगर वास्तव में मेरी फिकर है तो जूते दोपहर में खरीदा करो। इस समय मैं अधिक से अधिक फूला रहता हूं। जूता खरीदते समय मुझे और मेरे साथी दोनों को अलग-अलग नपवाना चाहिए, कभी-कभी हमारे साइजों में अंतर होता है। एक बात यह सही है कि 20 साल की आयु के बाद मेरी लंबाई रुक जाती है, लेकिन चौड़ाई घटती-बढ़ती रहती है। जूता ठीक साईज से लगभग 1 सेंटीमीटर लंबा होना चाहिए ताकि जूते के अंदर पंजा आसानी से हिल-डुल सके। ऐसा जूता अगर एक दुकान पर न मिले तो दूसरी दुकान देखो। जूता धीरे-धीरे ढीला हो जाएगा या पैर में ठीक आने लगेगा, ऐसा विचार छोड़ दो। अगर जूता तंग है तो मुझे और तुम्हें, दोनों को तकलीफ होगी। अगर इस पर ध्यान नहीं दिया तो बुढ़ापे में मुझे मत कोसना, अपनी मंद बुद्धि से ही झगड़ना, बस!

जब तक तुम्हारी उम्र कम है, मुझे अधिक बीमारियां नहीं घेरेंगी, केवल छोटी-मोटी परेशानियां होंगी। एक बड़ी परेशानी तो तंग-जूतों से मुझ पर पड़ने वाले घट्टों से होती है। मेरी दूसरी परेशानी है एथलीट फुट, जिसे आम भाषा में 'खुर' कहा जाता है। यदि मैं लगातार गीला और गंदा रहूं तो कुछ परजीवी पौधे (जिन्हें फफूंद कहते हैं) मुझ पर हमला कर देते हैं। यदि तुम प्रतिदिन सोने से पहले हम दोनों पैरों को अच्छी तरह से धोकर साफ कपड़े से पोंछ लो तो इस बीमारी से बच सकते हो। हां, यदि किसी को यह हो ही जाए तो किसी डॉक्टर से पूछकर मलहम आदि ले लेना चाहिए। कभी-कभी मेरी उंगलियों के नाखून मुड़कर चमड़ी में घुस जाते हैं, इससे तकलीफ हो जाती है। यदि तुम कम से कम एक महीने में एक बार उंगलियों के नाखून काट दो तो बहुत ही अच्छा हो। हां, नाखूनों के मुड़े हुए सिरे काट कर उन्हें सीधा करना मत भूलना।

('आई एम जोज बॉडी' से रूपांतरित)

अंधविश्वास

हम समय-समय पर चकमक में अंधविश्वास, चमत्कार, जादू जैसे विषयों पर सामग्री प्रकाशित करते रहे हैं। फरवरी, 87 अंक में 'यज्ञ : कुछ सवाल' तथा नाटक 'चितावर' इसी श्रृंखला के हिस्से हैं। हम चाहते हैं कि तुम भी इसमें मदद करो। कटनी के राजेश सराफ ने ऐसे ही कुछ सवालों को उठाने वाला एक लेख भेजा है। लेख और साथ का पत्र हम यहां प्रकाशित कर रहे हैं।

संपादक जी,

मैं अपना लेख 'अंधविश्वास' भेज रहा हूं तथा आशा करता हूं कि आप इसे पत्रिका में स्थान देंगे। मैंने इस लेख के लिए 15 घंटे लगाए हैं, मतलब 23 से 24 दिन। आशा है आप समझने की कोशिश करेंगे मुझे।

पहले मैं कहानी लिखना चाहता था, फिर मैंने एक रोचक लेख लिखने की सोची और उस पर काफी मेहनत की। ताकि इसे जो भी एक बार पढ़ना शुरू करे तो अंत में ही रुके। यह पढ़ने वाले पर प्रहार करे और शिक्षाप्रद तथा मनोरंजक भी लगे।

□ राजेश सराफ

सचमुच अंधविश्वास भी बड़ी अजीब चीज है जो हमें कुएं का मेंढक बनाती है। हमारे विचारों को एक बहुत सीमित दायरा प्रदान करती है। जैसे हथेली खुजलाने पर हम कहते हैं, कोई हमें याद कर रहा है! और तो और बाईं या दाईं आंख फड़कने पर हम शुभ या अशुभ मानते हैं। हमारे जिज्ञासु मन में जितने भी प्रश्न उठते हैं उनका उत्तर अंधविश्वास बड़े अजीब तरीके से देता है। एक बहुत अच्छा उदाहरण, जो शायद तुम भी जानते हो—कुछ साल पहले चंद्रमा पर काले धब्बों का जवाब अंधविश्वास दिया करता था कि वहां एक बुढ़िया सूत कात रही है। पर जब वहां मानव पहुंचा तो बुढ़िया तो क्या दूर-दूर तक पत्ता भी नजर नहीं आया, मतलब अंधविश्वास का जवाब किसी ठोस सिद्धांत पर आधारित नहीं होता।

मगर आश्चर्य भी होता है कि आज जब अंधविश्वास पूरी तरह खोखला सिद्ध हो चुका है, तब भी हम उसकी टांग पकड़े बैठे हैं, आखिर क्यों?

इसी अंधविश्वास का मजाक उड़ाते हुए नौजवान कहते हैं, "अरे क्या यार, मानव चंद्रमा पर जा पहुंचा और तुम 16वीं शताब्दी में जी रहे हो।"

महाआश्चर्य तो तब होता है, जब शिक्षित लोग भी अंधविश्वास का अनुसरण करने से नहीं चूकते। जैसे, मेरी सहपाठी शीला जो बॉयलाजी साइंस से है, का विश्वास है कि केले के पेड़ की आवाज सवेरे सुनने से अपशकुन होता है। अब बताओ केले के बगीचों के माली की क्या हालत होगी? बेचारा, उससे पूछने पर उसने इस बात को केवल वहम बताया। मेरा दूसरा मित्र चंद्रप्रकाश, जो मुझसे दो साल आगे है—नेत्रदान के विषय में कहता है, "न मैं नेत्रदान नहीं करूंगा क्योंकि हम जो यमराज के पास ले जाते हैं वह उन्हीं चीजों के साथ अगला जन्म करता है"। मतलब, उसके कहे अनुसार उसके नेत्रदान करने पर वह अगले जन्म में अंधा बनेगा!

अंधविश्वास क्या है?

आखिर अंधविश्वास है क्या? हम इसे इस प्रकार परिभाषित कर सकते हैं:

"अंधविश्वास वह बला है, जो हमारे मन के घुमड़ते प्रश्न का किसी भी उत्तर द्वारा (भले ही उससे उसका दूर-दूर तक संबंध न हो) जवाब दे दे, या किसी साधारण या असाधारण घटना को देखकर, जिसे समझने में समय बर्बाद न करके उसे दैवी शक्ति का नाम दे दे और उसे पूर्णतया सत्य मान ले।"

जो भी मनुष्य अंधविश्वास द्वारा दिए जवाब तथा दैवी शक्ति को विश्वास में ले लेता है उसका विश्वास बहुत मजबूत आधार पर नहीं होता (सिवाय ऐसे शिक्षित के जिनका घर अंधविश्वास के अंधकार से परिपूर्ण हो), जैसे, शीला को बता दिया जाए कि नहीं आवाज तो शुभ होती है तो वह वहां सवेरा होने से पहले ही बैठी रहेगी, आवाज सुनने के लिए! और यदि उसे बता दिया जाए कि आवाज क्यों होती है तो वह अपने ऊपर हंस सकती है। हां, शीला के मां-पिताजी को बताया जाए तो वह आपके

ऊपर हंसेंगे और कहेंगे कि उनके पूर्वज क्या झूठ कह गए हैं! मतलब, अशिक्षित का अंधविश्वास बहुत पुख्ता होता है, क्योंकि हम उन्हें समझा नहीं सकते।

न्यूटन नाम का एक लड़का जो सेब के पेड़ के नीचे बैठा था, अचानक सेब गिरा, वह जागा और स्वाभाविक है कि वह डरा, पर भागा नहीं। उसने आसपास देखा, कोई भी न दिखाई देने पर उसने आवाज लगाई, पर कोई था ही नहीं। उसने पेड़ की तरफ देखा और सोचा, यह आखिर गिरा तो गिरा क्यों? उसने सोचा, और सोचते-सोचते संसार को गुरुत्वाकर्षण का नियम दे डाला, आज तक उसे हम अपनी किताबों में पढ़ते हैं। अब मानो कि न्यूटन के ऊपर सेब गिरा, वह डरा, आस-पास देखा, कोई भी न दिखने पर वह तेजी से घर की ओर भागा, अपने घर वालों, गांव वालों के सामने उस पेड़ को दैवी शक्ति से जोड़ दिया कि उसके नीचे सोने से अपने आप सेब गिरता है तो यह उसका अंधविश्वास होता है, मूर्खता भी।

अंधविश्वास का दूसरा नाम रूढ़िवाद

भारत जैसे देशों के लिए अंधविश्वास बहुत बड़ा कलंक है, क्योंकि यहां अशिक्षित वर्ग का बहुतायत तो है ही साथ में जो थोड़े-बहुत शिक्षित हैं वह भी इसके लपेटे में हैं और इसी अंधविश्वास के कारण लोगों में धार्मिक कट्टरता है।

अंधविश्वास की सीमा

जी हां, इसकी भी सीमा होती है। जैसे हिंदु धर्म के अंधविश्वास हिंदु धर्म में होंगे, वह दूसरे धर्म में लागू नहीं होंगे। इसी प्रकार अलग-अलग धर्म के अंधविश्वास अपनी ही जाति वर्ग को प्रताड़ित करेंगे। सिवाय कुछ अपवादों को छोड़कर यह बात सौ आने खरी उतरती है। एक बात और कि जो धर्म जितना पुराना होगा उसमें उतनी ही अधिक अंधविश्वास, कट्टरता होगी।

यह कटु सत्य है, उदाहरण के तौर पर हिंदु बहुल प्राचीन धर्मों में से है इसलिए अंधविश्वास की अधिकता इसमें ज्यादा है तथा सिख धर्म जो कि भारत में उपजा, सबसे नया धर्म (1469) है, उसमें अंधविश्वास बहुत कम है।

क्या अंधविश्वास खत्म किया जा सकता है?

यदि हम किसी से पूछें कि अंधविश्वास कैसे खत्म किया जाए तो वह आंख मींचकर उत्तर देगा कि लोगों को शिक्षित करो। तो चलो इंग्लैंड (जहां शिक्षितों की अधिकता है) चलें, अब वहां होटल का कमरा मांगों। यदि संयोगवश कमरे का नंबर 13 है तो उस पर 12A लिखा मिलेगा। पूछे जाने पर कोई जानकारी देगा कि वहां पर 13 नंबर अपशकुन माना जाता है। हां, यह बात अलग है कि वहां इतने कम अंधविश्वास हैं, जो उन्हें तथा उनके देश को कोई विशेष नुकसान नहीं पहुंचा सकते। मगर अंधविश्वास तो है, उसे जड़ से खत्म तो पश्चिमी देश भी नहीं कर सके। फिर अपने हिंदुस्तान जैसे देशों का क्या कहना। हां, अंत में एक बात, 'अंधविश्वास खत्म नहीं हो सकता, जब तक हम (मानव जाति) हैं, क्योंकि यह हमारे साथ पला, बढ़ा और मरेगा भी हमारे साथ। पर, हां, हम कम जरूर कर सकते हैं।'

छींक, बिल्ली का रास्ता काट जाना, छिपकली गिरना आदि शकुन-अपशकुनों को लेकर तुम क्या सोचते हो, तुम्हारे क्या अनुभव हैं? अंधविश्वास के बारे में तुम्हारा क्या ख्याल है? क्या तुम भी अंधविश्वासों पर यकीन करते हो? अपने विचार और अनुभव चकमक को लिखो और इस चर्चा को आगे बढ़ाओ।

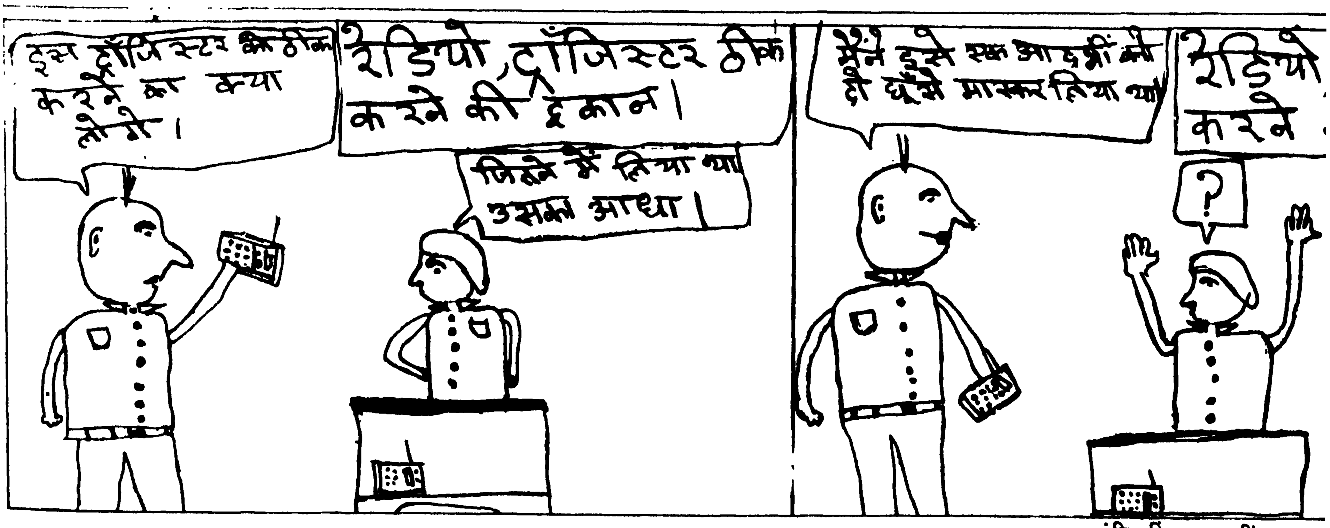

संदीप सिंह, छटवीं, इटारस

मेरा पन्ना

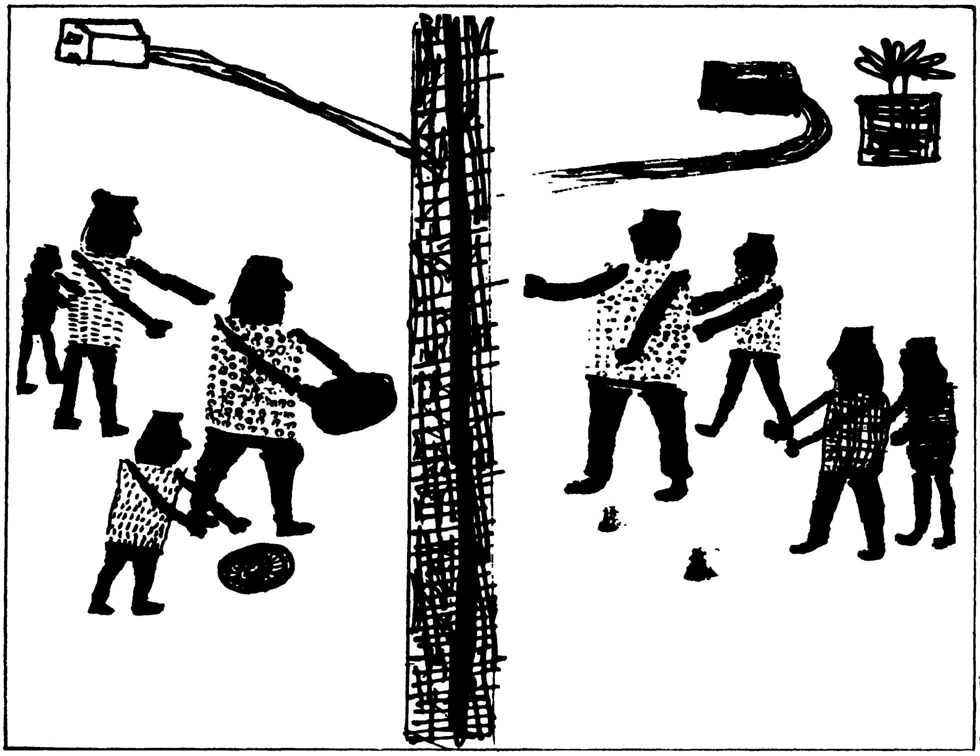

ईश्वर सिंह पवार, सातवीं, पालड़ा, शाजापुर

सच्चाई : एक अनुभव

मैंने जिस स्कूल में शिक्षा प्राप्त की है, वह पूरे नगर में अपने आप में एक मिसाल है। वह एक कान्वेंट स्कूल है, जिसका उद्देश्य "प्रेम और सेवा" है। वहां किताबी ज्ञान से अधिक नैतिकता पर जोर दिया जाता है। इसी स्कूल की यह घटना है।

जब हम हाई स्कूल में थे तो हम साइकिल से स्कूल जाते थे। स्कूल में नियम है कि प्रातःकालीन प्रार्थना के दौरान या उसके बाद स्कूल पहुंचने पर एक कालखंड यानी चलीस मिनट तक कक्षा में प्रवेश करना वर्जित है।

एक बार स्कूल जाते समय रास्ते में ही साईकल का चक्का दगा दे गया। जिसको सुधारने में 15 मिनट लग गए और मैं स्कूल देर से पहुंची। उस समय प्रार्थना हो रही थी, उसी दिन पहले कालखंड में प्रायोगिक कार्य करना था। मैंने सोचा अगर मैं मेनगेट से गई तो मुझे 50 मिनिट तक बाहर खड़े रहना पड़ेगा। इसलिए मैं शिक्षक–शिक्षिकाओं के लिए बने गेट से अंदर गई ताकि प्रिंसिपल को अपने देर से आने का कारण बताते हुए उनसे माफी मांग सकूं।

हमारी प्रिंसिपल अक्सर यह बात कहती थीं कि अगर तुम सच कहो तो गलती होने पर तुम्हें माफ कर दिया जाएगा, इसलिए भी मुझे कुछ हिम्मत बंधी हुई थी। पर उस विशेष गेट से आने वालों में मैं अकेली नहीं थी, बल्कि और भी लड़कियां थीं जो जल्दी से अपनी–अपनी कक्षाओं में चली गईं पर मुझ पर उस समय सच्चाई का भूत सवार था, इसलिए साइकिल खड़ी करके प्रिंसिपल के रूम के सामने खड़ी होकर प्रार्थना समाप्त होने तक इंतजार करने लगी।

जब प्रार्थना समाप्त हुई तो सबसे पहले स्कूल के एक क्लर्क उस ओर आए। उन्होंने मुझे देखा तो वे समझ गए कि मैं उस गेट से आई हूं। जहां से आना मना है। उन्होंने मुझसे कहा कि मैं प्रिंसिपल के आने तक यूं ही खड़ी रहूं। प्रिंसिपल आईं तो मुझे कुछ कहने का मौका दिए बिना ही क्लर्क ने मेरी पूरी शिकायत कर डाली। मैंने अपनी सफाई में कुछ कहना चाहा पर उनको इसके लिए फुर्सत ही नहीं थी। वो मेरे पास आईं और रटी रटाई डांट पिला दी-"यू डिसओबिडिएन्ट चाइल्ड", तुम बिना परमीशन के इस गेट से कैसे अंदर आईं? और फौरन अपने रूम में चली गईं। मुझे समझ में नहीं आया कि मैं खड़ी रहूं या क्लास में चली जाऊं। कुछ देर में वहीं खड़ी रही, फिर मैंने सोचा कि अब मुझे शायद कक्षा में जाने की अनुमति मिल जाए। मैं आखिर हिम्मत करके प्रिंसिपल रूम में घुस गई तो प्रिंसिपल ने मुझे घूरकर देखा, पर मैंने साहस करके उनको देर से आने का कारण बताया और नम्रतापूर्वक क्षमा मांगी। इस बार वे थोड़ा नरम पड़ीं फिर भी उनका स्वर कठोर रहा। वे बोली, "यह बात पहले क्यों नहीं बताई।"

☐ आर. अनुराधा
जबलपुर

मेरी शाला है चिड़ियाघर

□ गिरिजा शंकर कुलश्रेष्ठ

आनंद श्रीवास्तव, नवमीं, दतिया

मेरी शाला है चिड़ियाघर
हंसते, खिलते, बच्चे लगते हैं शोभाकर
मेरी शाला है चिड़ियाघर......

ढीठ बने गौरैया से,
कमीं तक बार-बार आते हैं,
बुला-बुला कर सिर को खाते,
छुट्टी छुट्टी शोर मचाते हैं।
चपत लगी डर जाते, हंसती
तो हंसते हैं मुंह बिचकाकर
मेरी शाला है चिड़ियाघर......

हिरन बने चौकड़ियां भरते
ऊधम करते कभी न थकते।
सबक याद करते मुश्किल से
बात-बात पर लड़ते-मरते।
पंख लगा उड़ते से लगते
रंग-बिरंगे सुघड़ कबूतर
मेरी शाला है चिड़ियाघर......

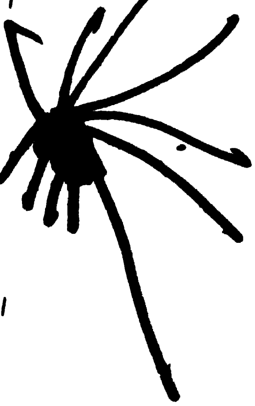

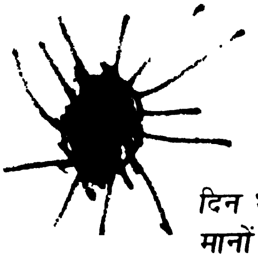

तोतों सा मुंह चलता रहता
गिलहरियों से चंचल हैं
कुछ भालू से रुखे, मैले,
बहुत शशक से कोमल हैं,
दिन भर खाते, फुदक उछलते
मानों हैं वे नटखट बंदर
मेरी शाला है चिड़ियाघर......

पथ में कहीं दीख जाती हूं
नयन छुपा गायब हो जाते।
कहीं ओट से मुझे बुलाकर
'दीदी-दीदी' फिर चिल्लाते।
कान पकड़ खींचू तो, अपराधी से
हो जाते हैं नत सिर
मेरी शाला है चिड़ियाघर.

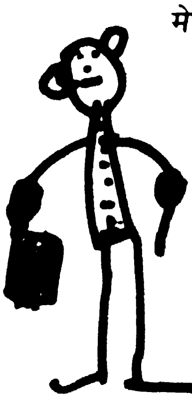

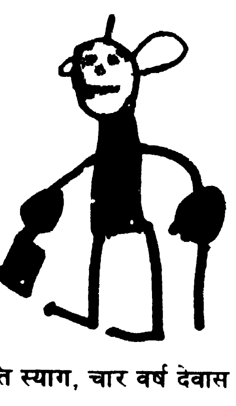

गोरे, काले, मोटू, पतले,
मैले, उजले, कोमल, ठिगने।
लंबे, रूखे, सीधे, चंचल
अनगढ़ कृति से भी हैं कितने
पर जैसे, जितने भी हैं, शैशव
हैं इस दुनिया में प्रियतर
मेरी शाला है चिड़ियाघर......

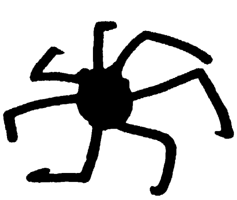

ाति स्याग, चार वर्ष देवास

मरापन्ना

तोते ने करी–खटिया खड़ी।

एक बार एक तोता शहर घूमने जा रहा था। उसे एक जगह खूंटे पर एक चना मिला। उसे देखकर तोता तुरंत फोड़ने लगा तो चना की एक दाल खूंटे में घुस गई और एक को तोता खा गया। तोता उस दाल को निकलवाने के लिए बढ़ई के पास पहुंचा और बोला, कि आप खूंटा चीरकर दाल निकालो। बढ़ई बोला, क्या मैं तुम्हारा चाकर हूं कि दाल निकालूं!

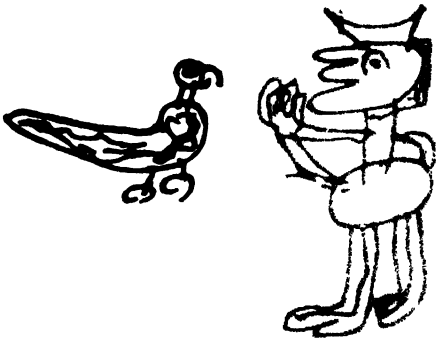

तोता राजा के पास गया और राजा से बोला, आप बढ़ई को मारें। राजा बोला, मैं कोई तुम्हारा चाकर हूं कि बढ़ई को मारूं!

तोता रानी के पास गया और बोला, रानी तुम राजा को छोड़ दो तो राजा बढ़ई से दाल निकालने के लिए कहे। रानी बोली, तू भाग यहां से!

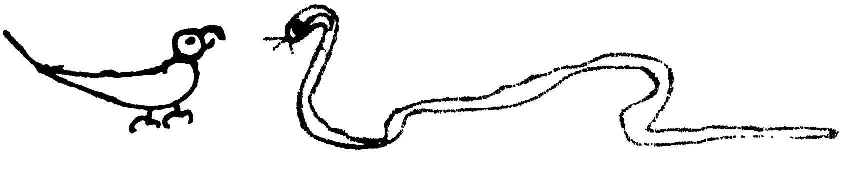

तब तोता सांप के पास पहुंचा और सांप से बोला, तुम रानी को डसो। सांप बोला, भाग यहां से!

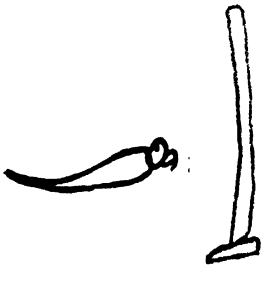

तोता वहां से भागा और लाठी से बोला, तुम सांप को मारो, तब वह रानी को डसे और रानी राजा को छोड़ दे तो राजा बढ़ई को मारे तो बढ़ई दाल निकाले। तब लाठी बोली कि जा, भाग यहां से!

तब तोता आग के पास गया और उससे बोला, लाठी को जलाओ। आग ने भी उसको भगा दिया।

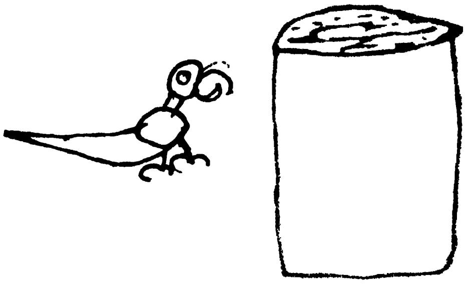

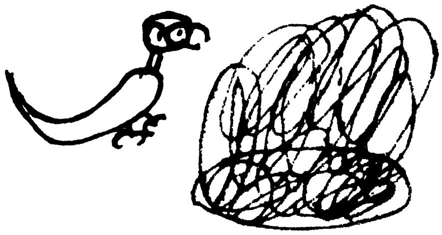

तब तोता पानी के पास गया और पानी से बोला, तुम आग को बुझाओ। पानी ने भी तोते को भगा दिया।

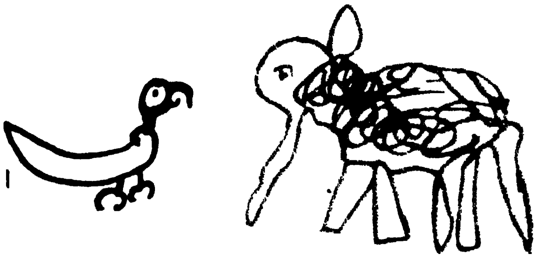

तब तोता हाथी के पास गया और बोला कि पानी को सोख लो। हाथी ने तोता से कहा मुझसे नहीं होगा और उसे भगा दिया।

तब वह चींटी के पास गया और बोला, चलो हाथी को चाबो। चींटी चली हाथी को चाबने के लिए।

तब हाथी बोला, चींटी बहन तुम हमको मत चाबो, मैं पानी सोखने जाता हूं। तब पानी बोला, कि हाथी भैया तुम हमको मत सोखो, मैं आग बुझाने जाता हूं। तब आग बोली कि पानी तुम हमको मत बुझाओ, मैं लाठी जलाने जाती हूं। लाठी बोली, आग तुम हमको न जलाओ, मैं सांप मारने जाती हूं। सांप बोला, तुम हमको मत मारो, में रानी को डसने जाता हूं। रानी बोली,तुम हमको न डसो, मैं राजा को छोड़ देती हूं। राजा बोला, रानी तुम हमको मत छोड़ो, मैं बढ़ई को कहने जाता हूं।

राजा ने बढ़ई को कहा, जाओ खूंटे को चीरकर दाल निकालो। बढ़ई ने खूंटा चीरा और दाल निकाल दी। तोता दाल खाकर शहर चला गया।

चित्र/कथा : अमन दीवान पांडेय
खड़का, रीवा

मेरे पापा

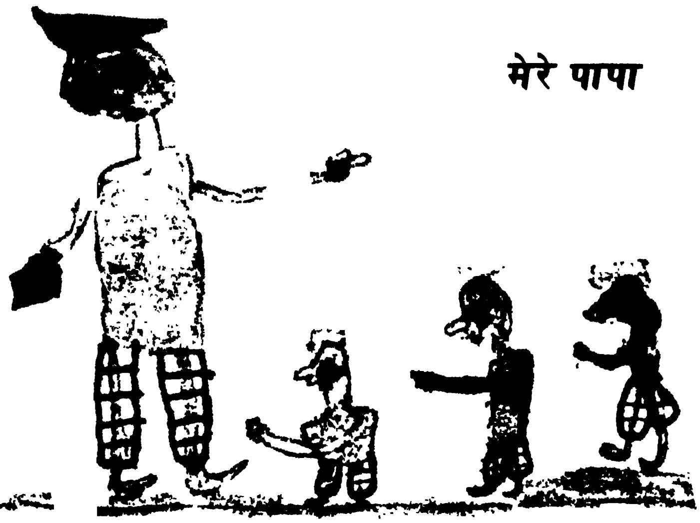

करणसिंह, सातवीं, पालड़ा, शाजापुर

मेरे पापा का आफिस नं. 20
उनका फोन नं. 20 है।
वे सदा 20 सूत्र की बातें करते हैं।
खुद भी 19 नहीं 20 हैं
क्योंकि........।
पिछले 20 सालों में
वे कुछ भी क्यों न कर पाए।
इसके
उनके पास बहाने भी
20 हैं।

□ तस्नीम, मण्डलेश्वर

(1)
मेरा पन्ना
(4)
(5)
मेरा पन्ना
(2)
मेरा पन्ना
(3)
(6)

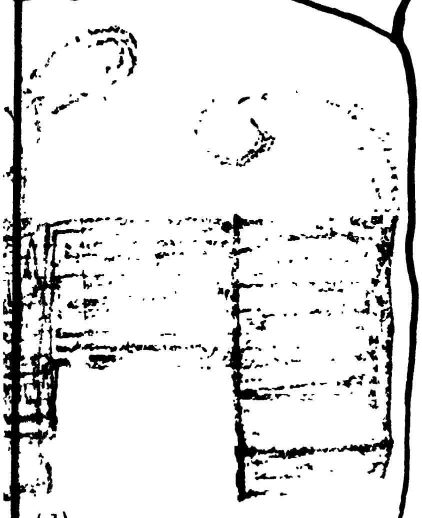

(7)

(10)

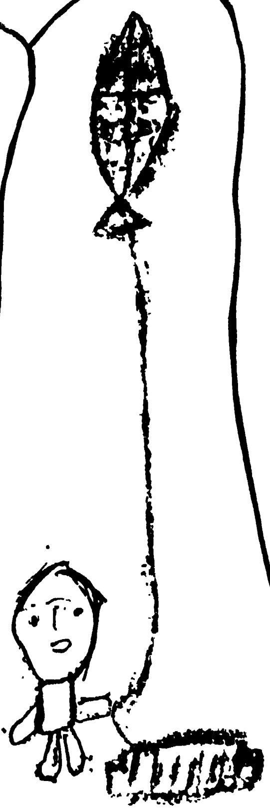

(11)

(8)

मेरा पन्ना

(9)

ये चित्र बनाए हैं:

(1)(2) कुमार गौरव जैन, दूसरी, जैनबाग, सतना
(3) विक्रांत तोमर, [illegible], मुरैना
(4)(8) भारती शर्मा, आठवीं, बिरां, बिलासपुर
(5)(7) प्रकाश चंद्र तिवारी, पांचवीं, बिरां
(6) कमल चंद्र पाचौरिया, आठवीं, महूखेड़ा, देवास
(9) महेन्द्र पटेल, सातवीं, छापरी, देवास
(10) दिलीप कुमार गेहलोत, पांचवीं, महिदपुर रोड, उज्जैन
(11) नितिन कुशवाह, तीसरी, बंबई
(12) योगेश गेहलोत, दूसरी, महिदपुर रोड

मेरा पन्ना

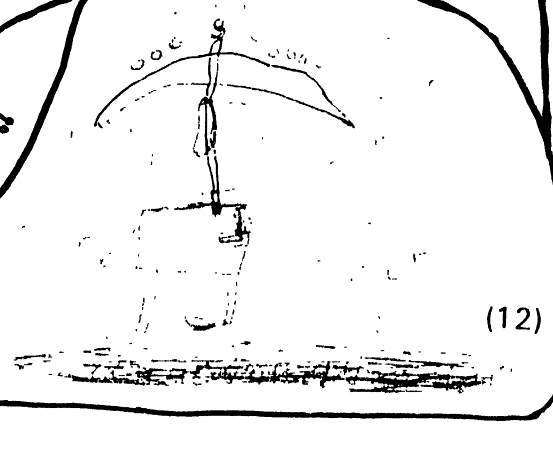

(12)

मेरा पन्ना

गोपालसिंह आस्के पापरा, देवास

गरमी

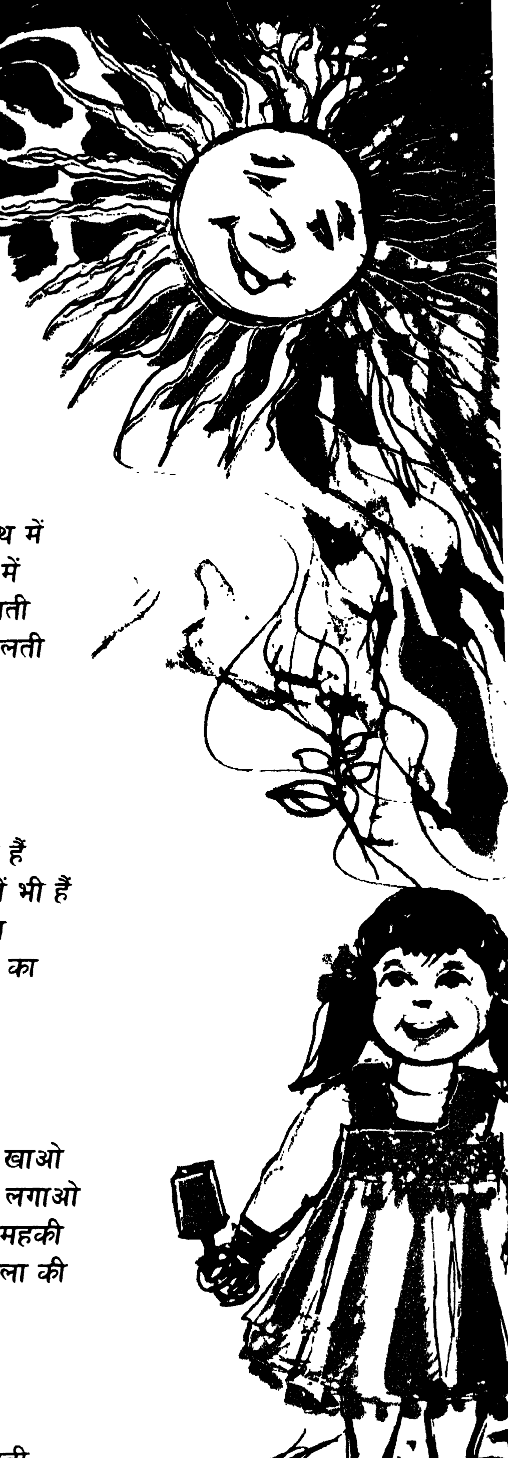

सूरज बड़े सवेरे चमका
कितने तड़के दिन है निकला
आंधी जैसी धूल उड़ाती
पेड़–पौधों को झुलसाती

गरम हवा भी चली साथ में
पानी दुर्लभ कुंआ ताल में
रितु गरमी की आई तपती
धरती गरम हवा सी जलती

चटकीले रंगों के कपड़े
गरमी में अच्छे न लगते
भीने रंग के उजले–ढीले
कपड़े गरम दिनों में सजते

गरमी में सब दुख नहीं हैं
कुछ–कुछ अच्छी चीजें भी हैं
ढेर लगा है तरबूजों का
पतली ककड़ी खरबूजों का

और फलों का जो है राजा
आम इसी गरमी में आता
कच्चा पीसो, चटनी खाओ
भूंजो ढेरों पना बनाओ

पक जाने पर चूसो खाओ
छिलका गुठली ढेर लगाओ
फूलों लदी निवारी महकी
रात ढले खिलते केला की

शीतल भीनी खुशबू सूंघो
रात देर तक बाहर लेटो
पीले गुच्छे अमलतास के
लद जाते हैं डाल–डाल पे

पढ़ने से छुट्टी हो जाती
लंबी दुपहरिया गरमी की
सोते ताश खेलते जाती
इसी तरह जाने कब कैसे
गरमी की रितु है कट ज

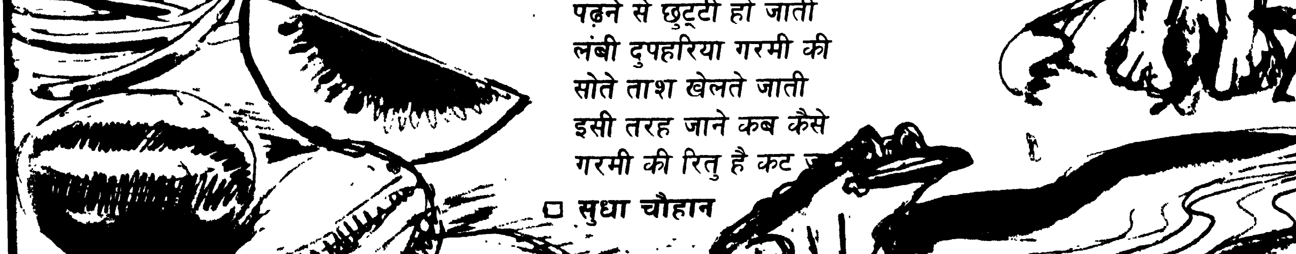

□ सुधा चौहान

सवालीराम

■ लज्जनी के पौधे की पत्तियों को छूने से वे सिमट क्यों जाती हैं, हाथ से छूने का और सिमटने का आपस में क्या संबंध है?

□ दिनेश कुमार वैष्णव, खापरखेड़ा, होशंगाबाद

कुछ पौधे प्रकाश के प्रति संवेदनशील होते हैं, इसका मतलब यह है कि प्रकाश कम या अधिक होने का असर उन पर पड़ता है। जैसे कुछ पौधों की पत्तियां रात में सिमट जाती हैं और दिन में खुल जाती हैं। कुछ पौधों के फूल दिन में खिलते हैं और रात में बंद हो जाते हैं। कुछ अन्य पौधों के फूलों में इससे उल्टी क्रिया होती है– फूल रात में खिलते हैं, और दिन में बंद होते हैं।

लाजवंती या छुईमुई (लज्जनी) इसी प्रकार का पौधा है। इस पौधे में ऐसी व्यवस्था होती है कि इसकी पत्तियों में से रस तने में खींच लिया जा सकता है या फिर से पत्तियों में भेजा सकता है। जब इसे छूते हैं तो पत्तियों से रस खिंच जाता है और पत्तियां ढीली होकर सिमट जाती हैं। कुछ समय बाद जब रस फिर से पत्तियों में आ जाता है तो वे पुनः पूर्ववत तन जाती हैं।

लाजवंती के पौधे को ध्यान से देखो, पत्तियां जहां आपस में जुड़ी रहती हैं वहां एक छोटी सी फूली हुई रचना है इसी तरह की रचना पत्तियों के तने से जुड़े हुए भाग में है। चित्र में तीर फूली हुई रचना को बता रहे हैं। तीर वाली जगहों में ढेर सारी ऐसी कोशिकाएं होती हैं जो रस खींचने से (सोखने से) फूल जाती हैं और रस के निकल जाने पर पिचक जाती हैं। स्पर्श के प्रति अत्यंत संवेदनशील लाजवंती की पत्तियों को छूने से पत्तियों का पानी उन विशेष रचनाओं में पहुंच जाता है जिससे पत्तियां सिमट जाती हैं। लज्जनी की पत्तियां न सिर्फ हमारे छूने से बल्कि लकड़ी छुआने से या किसी कीड़े के या किसी भी जानवर के स्पर्श से सिमट जाती हैं।

रात में पत्तियों के सिकुड़ने का लज्जनी के पौधे के लिए काफी फायदा है। रात में चूंकि पत्तियों के खुले रहने से पानी अधिक मात्रा में उड़ेगा, वाष्पित होगा अतः पत्तियों के सिकुड़ने से पानी कम मात्रा में उड़ता है।

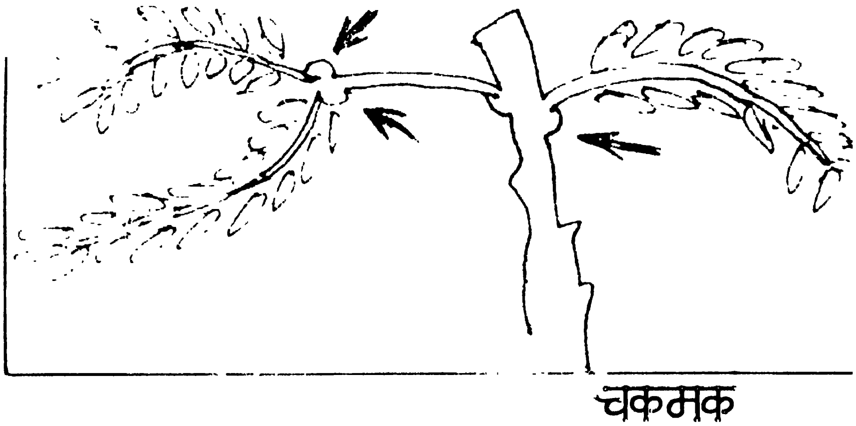

■ पृथ्वी की सतह से लेकर केंद्र तक किसी प्रकार की परतें और बनावट मिलेगी?

□ मनीष सोनी, हरदा

पृथ्वी की सतह से लगभग 70 किलोमीटर नीचे तक के भाग को पृथ्वी की पपड़ी कहा जाता है। इस हिस्से के बारे में सबसे अधिक जानकारी है। इसी हिस्से में पहाड़, समुद्र आदि सभी आ जाते हैं। यह अहसास तो तुम्हें होगा ही कि खोदने पर काफी नीचे तक मिट्टी की परतें मिलती हैं। लेकिन पपड़ी की मोटाई तो उससे कहीं बहुत अधिक है। मिट्टी के नीचे अनेक प्रकार की चट्टानें होती हैं।

पृथ्वी के गर्भ में क्या है यह जानने के लिए आजकल बहुत बारीकी से भूकंप का अध्ययन किया जाता है। पृथ्वी के किसी हिस्से में कुछ हिलता है तो उसके कारण कंपन होता है। दूर–दूर तक यह कंपन पृथ्वी में लहरों के रूप में फैलता है। कंपन के इस फैलने को 'भूकंपीय तरंगें' भी कहा जाता है।

जब कंपन की तरंग पृथ्वी के ऐसे हिस्से में पहुंचती है जिसका घनत्व पहले की तुलना में ज्यादा हो तो कंपन की गति बढ़ जाती है।

पृथ्वी के पपड़ी वाले हिस्से के बाद कंपन तरंगों की गति में वृद्धि पाई जाती है यानी इस हिस्से में पृथ्वी का घनत्व कुछ अधिक है। पृथ्वी में ऐसे कई अलग–अलग हिस्से या परतें हैं, जिनको विभिन्न नाम दिए गए हैं।

लगभग 2900 किलोमीटर की गहराई पर पृथ्वी के गर्भ का केंद्रीय हिस्सा शुरू होता है। पूरी पृथ्वी के आयतन का यह केवल 17 प्रतिशत हिस्सा है पर भार में यह लगभग 1/3 भाग है।

कंपन तरंगों के अध्ययन से पृथ्वी के केंद्रीय हिस्से के बारे में कई बातों का अच्छा अनुमान लगाया गया है।

इस भाग में पृथ्वी का घनत्व लगभग 10 ग्राम प्रति घन सेंटीमीटर का है। (यानि लगभग चांदी के घनत्व जितना)। बढ़ते–बढ़ते पृथ्वी के केंद्र के पास घनत्व लगभग 16 ग्राम प्रति घन सेंटीमीटर हो जाता है। केंद्रीय भाग में दाब और ताप भी बहुत अधिक होता है पृथ्वी का केंद्र लगभग 6400 किलोमीटर की गहराई पर है। वहां पर दाब और ताप कितना होगा? मोटे रूप से अंदाज लगा सकते हो। आजकल वैज्ञानिक अनुमानों से कहा जाता है कि केंद्र पर तापमान लगभग4000-6000 डिग्री से.है।केंद्र पर दाब तो वायुमंडल के सामान्य दाब से 40 लाख गुना अधिक है।

काफी समय तक यह समझा जाता था कि पृथ्वी के केंद्रीय भाग में अधिक ताप और दाब के कारण सभी पदार्थ तरल रूप में होते हैं। पर अब यह धारणा टूट गई है।जहां से केंद्रीय भाग शुरू होता है (लगभग 3000 किलोमीटर की गहराई पर) वहां कंपन तरंगों के गुणों से पता चलता है कि पृथ्वी के पदार्थ में दृढ़ता का गुण नहीं होता। इसीलिए इसे तरल स्थिति में कहा जाता है पर अधिक भीतर जाने पर यानि लगभग 5000 किलोमीटर की गहराई पर, फिर से पदार्थ में दृढ़ता पाई जाती है, यानि उसे मोड़ने के लिए जोर लगाओ तो आसानी से मुड़ता नहीं है। इस भीतरी केंद्रीय हिस्से में पदार्थ की दृढ़ता स्टील से दुगनी मानी गई है। इसीलिए केंद्र के पास के इस हिस्से में पदार्थ को ठोस स्थिति में कहा जाता है।

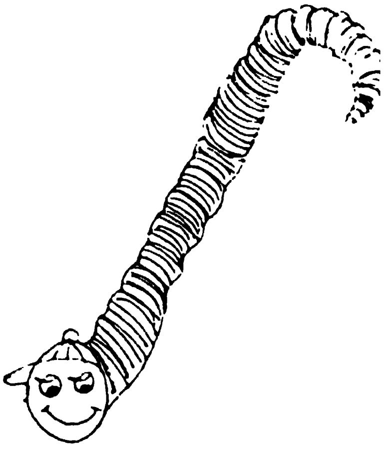

■ *केंचुआ क्या खाता है?*

□ मथुरा प्रसाद साहू, मातापुरा
गौतम सिंह, बिच्छापुर
गेंदालाल, चांदौन (होशंगाबाद)

तुमने देखा होगा कि जहां बहुत सारे केंचुए बिल बनाकर रहते हैं वहां मिट्टी की गोल–गोल गोलियों के ढेर पाए जाते हैं।

केंचुआ मिट्टी खाता है। और उसे अपने मलद्वार से निकाल देता है जिससे मिट्टी की गोलियों के ढेर बन जाते हैं। लेकिन मिट्टी खाने से किसी जीव का पेट कैसे भरता होगा? तुमने देखा होगा कि पेड़–पौधे, पत्तियां और छोटे–बड़े जीव जंतुओं के अवशेष मिट्टी में ह्यूमस के रूप में मिले रहते हैं। केंचुए की पाचन नली में यह ह्यूमस पच जाता है और केवल मिट्टी बाहर निकाली जाती है। केंचुए के ऐसा करने से एक फायदा भी है, खेत में नीचे की मिट्टी को ऊपर लाने के लिए हल चलाया जाता है, केंचुआ भी यही करता है, केंचुए द्वारा निकाली गई मिट्टी रंध्रमय (पोरस) होती है जिसमें हवा अंदर जा सकती है। ऐसी मिट्टी उपजाऊ होती है।

मदारी का खेल

मेरे गांव में एक बार एक मदारी आया था। मेरे बहुत से साथी तथा गांव वालों को पता चला तो वे सब मदारी के साथ बीच गांव में जा पहुंचे। मदारी मेरे स्कूल के सामने से भी निकला तो मैंने अपने टीचर से छुट्टी ले ली और खेल देखने पहुंच गया।

मदारी ने बहुत से बच्चों की भीड़ देखी तो बोला, आज मैं बहुत अच्छा खेल दिखाऊंगा। जब मदारी ने खेल शुरू किया तो उससे पहले बोला, सुनो बेटा आप सब लोग एक जगह बैठ जाओ तो अच्छी बात है।

जब मदारी बंदर से बोला, जाओ बेटा ससुराल चले जाओ तो बंदर नाराज हो जाता। तो कहता, ये बेटा तुम ससुराल जाओ मैं तुमको एक साड़ी लाकर दूंगा। फिर मदारी ने बंदर को अपना रूमाल दे दिया तो बंदर ने उसे पहनकर ससुराल जाने लगा तो मदारी बोला, क्या बिटिया मुझसे भेंट नहीं करोगे, तो बंदर भेंट करने लगा। मदारी के गले से लिपटकर।

बंदर हूप-हूप करने लगा तो मदारी ने उसको तमाचा मार दिया। गाल में जोर से तमाचा लगने से बंदर नाराज हो गया और मदारी से झूम पड़ा। बंदर ने मदारी को नोंच डाला। तो मदारी ने गुस्से में लाठी उठाकर बंदर को तीन-चार दे मारी तो बेचारा बंदर मर गया। फिर मदारी ने बंदर को रस्सी में बांधकर फेंक दिया।

□ सेवकराम, सातवीं
रानी पिपरिया, होशंगाबाद

माथापच्ची

(1)

मैं स्टेशन पर अपने मित्र से मिलने गया था। उसकी गाड़ी आने से पहले स्टेशन से एक सुपरफास्ट गाड़ी गुजरी, जो वहां रुकी नहीं। इस गाड़ी को मुझे पार करने में 9 सेकंड लगे और पूरे स्टेशन को पार करने में 21 सेकंड लगे। हां, स्टेशन 88 मीटर लंबा था।

अब हिसाब लगाकर बताओ उस गाड़ी की कुल लंबाई क्या रही होगी?

(2)

एक किसान अपने ट्रेक्टर ट्राली में गेहूं लादकर मंडी बेचने चला। वह 8 किलोमीटर प्रति घंटे की रफ्तार से गया। वापिस आते समय उसने दूसरा रास्ता चुना, जो 2 किलोमीटर लंबा था। इस बार वह 10 किलोमीटर प्रति घंटे की रफ्तार से लौट रहा था। उसने पाया कि वापसी में उसे 12 मिनट कम लगे।

बताओ, आने व जाने के रास्ते क्रमशः कितने कितने किलोमीटर के रहे होंगे?

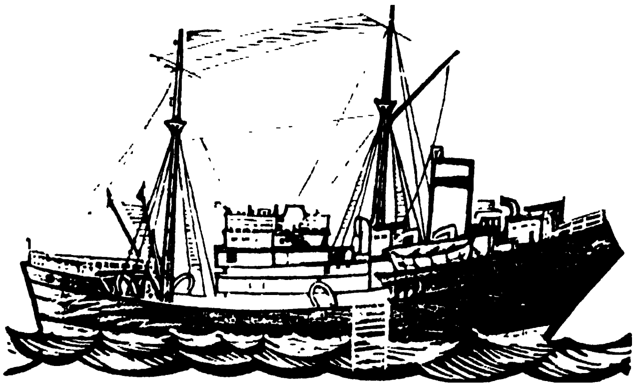

(3)

समुद्र में एक जहाज खड़ा है। इस जहाज में उतरने-चढ़ने के लिए 12 सीढ़ियों की एक रस्सी लटक रही है। हरेक सीढ़ी एक-एक फुट के अंतर पर है। सबसे नीचे की चार सीढ़ियां पानी में डूबी हैं। अचानक समुद्र में ज्वार आया और समुद्र का पानी 4 फुट और बढ़ गया। बताओ कितनी और सीढ़ियां पानी में डूब गईं?

(4)

एक जंगल में 9 व्यक्ति अपने रास्ते से भटक गए। उनके पास पांच दिन का खाना था। दूसरे दिन उन्हें उसी जंगल में एक और टोली मिली, जो पहले से ही अपने रास्ते से भटक चुकी थी और जिसके पास बिल्कुल खाना नहीं था। अब हिसाब करने पर पाया गया कि दोनों टोलियों को वह खाना सिर्फ तीन दिन तक ही चलेगा।

क्या तुम बता सकते हो कि दूसरी टोली में कुल कितने लोग रहे होंगे?

(5)

लबालब भरी एक लोहे की टंकी में 30 बाल्टी पानी अंटता है। मैं उसके पेंदे के पास लगे नल से एक बाल्टी पानी भरना चाहता हूं। साथ ही मैं घड़ी भी देखता हूं कि एक बाल्टी भरने में कितना समय लगता है।

माना कि बाल्टी भरने में आधे मिनट का समय लगा। अब प्रश्न उठता है कि यदि टंकी के नल को खुला छोड़ दिया जाए, तो टंकी को खाली होने में कितना समय लगेगा?

(6)

एक बार रमेश के घर पर बीस व्यक्ति (पुरुष, महिला और बच्चे) जा पहुंचे। उसने इस समूह में कुल 20 संतरे बांटे। इस प्रकार—प्रत्येक पुरुष को 2 संतरे, और प्रत्येक स्त्री को तीन संतरे। बच्चों के लिए आधा-आधा संतरा दिया गया।

सवाल है, उस समूह में कुल कितने पुरुष, कितनी महिलाएं और कितने बच्चे थे?

(7)

एक यात्री समुद्री जहाज अचानक दुर्घटनाग्रस्त हो गया। कुछ लोग एक नाव में बैठकर बच निकले। उस नाव में 13 दिन तक के लिए पीने के पानी की व्यवस्था थी। नाव पर सवार लोगों में प्रत्येक आदमी एक दिन में 1 लीटर पानी पीता था। समुद्र में चलते-चलते पांचवें दिन उस नाव से कुछ पानी गिर गया। उसी दिन नाव में एक व्यक्ति की मृत्यु हो गई। नाव में पीने का पानी पूरे समय तक रहा। बताओ कितना पानी नाव से गिर गया होगा?

(8)

काछी मल्लाह नर्मदा नदी के बहाव की उल्टी दिशा में अपनी नाव चला रहा था। आधा घंटे में उसने तीन चौथाई किलोमीटर की दूरी तय कर ली। अगर नदी में बहाव नहीं होता तो उसे यह दूरी तय करने में केवल 5 मिनट ही लगते।

सोचकर बताओ, नदी किस गति से बह रही होगी?

(९)

मेरे कमरे में एक चौकोर खिड़की है, जिसकी एक भुजा 4 फुट लंबी है। मैंने तय किया है कि खिड़की की सतह के आधे हिस्से पर रंग करवा लूं। रंग करवाने के बाद भी खिड़की का जो हिस्सा खाली बचेगा वह ऊपर से नीचे तक 4 फुट लंबा है और बीच में दाएं से बाएं नापने पर भी वह 4 फुट का ही होगा।

क्या तुम समझा सकते हो कि यह कैसे होगा?

मानकुंड, देवास से आठवीं के छात्र बद्रीलाल मुकाती ने यह आसान सा सवाल भेजा है:

एक विद्यालय में तीन कमरे थे। तीनों कमरों से बराबर की संख्या में कुछ छात्र निकले। सामने ही पांच नल थे। छात्रों ने बराबर की संख्या में बंटकर उन पांचों नलों से पानी पिया। फिर वे पास के बगीचे में आम के झाड़ों की छाया में सो गए। आम के झाड़ सात थे। छात्र वहां पर भी सातों झाड़ों पर बराबर की संख्या में थे।

क्या तुम बता सकते हो छात्रों की संख्या कितनी रही होगी?

बूझो तो !

अस्सी मन का एक लक्कड़
उस पर बैठा एक मक्कड़
रत्ती-रत्ती रोज खाय,
बताओ कितने दिन में खाएगा?

●

अस्सी कोस पर रहे जजमान,
उसने दिया बकरी का दान,
कोस-कोस पर बकरी जनी,
कहो पंड्या जी कितनी बनी?

□ विकास सरमण्डल
बलवाड़ा, खरगोन

उत्तर : अप्रैल अंक के

1. यहां एक तरीका दिया गया है। क्या तुम अन्य तरह से सोच सकते हो?

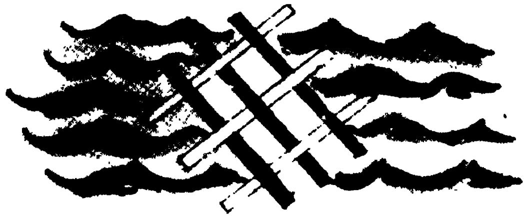

2. तीन बिंदु हमेशा एक तल में रहते हैं, लेकिन यह आवश्यक नहीं कि चार बिंदु एक ही तल पर रहें।

4. गरम पानी में डुबाई गई चम्मच। क्योंकि गरम पानी में डुबाने से चम्मच गरम हो जाएगी, इससे उस पर लगा पानी, गरमी लेकर जल्दी उड़ जाएगा।

5. उसी स्थान पर।

6. हेलीकाप्टर के उतरने का स्थान भोपाल से पूर्व दिशा में होगा।

7. दोनों का वजन बराबर है।

8. वास्तव में हम यह तुलना नहीं कर सकते, क्योंकि 20 डिग्री फैरनहाइट तापमान पर पानी बर्फ के रूप में होगा, और उसमें से अठन्नी नीचे नहीं जाएगी।

सबसे अंत में वही बाल गिरेगा, जो सबसे युवा होगा, अर्थात् जिसकी उम्र 1 दिन की है। अब देखते हैं कि कब उसके गिरने की बारी आएगी। पहले महिने में 150000 बालों में से 3000 बाल गिर जाएंगे, दो महिनों में 6000, एक साल के भीतर—12 x 3 हजार, अर्थात् 36 हजार। चार साल से कुछ अधिक समय बीत जाएगा जब आखरी बालों का नंबर आएगा। इस प्रकार आदमी के सिर के बालों की औसत उम्र आंकी गई है—4 वर्षों से कुछ अधिक।

10. घरौंदे की ईंट का वजन
4000 : 64 = 62.5 ग्राम

अपनी प्रयोगशाला

क्या बर्फ से पानी को खौलाया जा सकता है?

खौलते पानी की गर्मी से पानी नहीं उबाला जा सकता। तुम कहोगे, जब इस काम के लिए खौलता पानी भी बेकार है,तब बर्फ कैसे पानी को खौला सकता है! पर यह बात बिल्कुल सही है, बर्फ से पानी को खौलाया जा सकता है। अगर तुम मानने के लिए तैयार नहीं हो तो चलो, खुद एक प्रयोग करके इस बात की सचाई जान लो।

आवश्यक सामान: (1) एक ढक्कन वाली इंजेक्शन शीशी (2) स्टोव (3) पतीली (4) नमक (5) बर्फ का टुकड़ा (6) चिमटा।

प्रयोग

एक पतीली में पानी भरकर उसमें थोड़ा नमक डालो। अब स्टोव पर इस पतीली को रखकर इस नमकीन पानी को गर्म करो। अब इंजेक्शन शीशी को पानी से लगभग आधा भर लो। जब पतीली का नमकीन पानी पूरी तरह से खौलने लगे तब इस शीशी को पतीली के पानी में डुबो दो। जब पतीली में शीशी का पानी खौलता दिखे तब इस शीशी को पतीली से बाहर निकाल लो और शीशी को एक डाट (ढक्कन) द्वारा अच्छी तरह बंद कर दो। अब शीशी को उल्टा लटकाकर (चिमटे या परखनली पकड़ द्वारा पकड़कर) कुछ देर रुको। जब शीशी का पानी खौलना बंद हो जाए तो उसकी पेंदी पर बर्फ का टुकड़ा रखकर चित्र में दिखाए अनुसार उस पर ठंडा पानी डालो।

देखा, खौलने लगा न शीशी का पानी? यह बात तुम्हें और भी मजेदार तब लगेगी जब तुम शीशी को छूकर देखोगे! तुम देखोगे, शीशी कोई खास गर्म नहीं है, पर पानी खौल रहा है!

मालूम है, यह सब कैसे, और क्यों होता है? असल में बर्फ शीशी की दीवारों को ठंडा कर देता है और उसके फलस्वरूप शीशी के भीतर की वाष्प संघनित होकर पानी की बूंदों के रूप में बदल जाती है। और शीशी में से हवा पानी खौलाते वक्त ही निकल गई थी, इसलिए उसके भीतर स्थित पानी पर दबाव बहुत कम रह जाता है। कम दबाव पर द्रव आवश्यक तापक्रम से कम पर ही खौलने लगता है। बस यही कारण है कि शीशी का पानी ठंडा होने पर भी खौलता रहता है।

चलनी में पानी

"चलनी में पानी भरना या चलनी में दूध दुहना", यह कहावत अभी तक तो तुमने सिर्फ अपने दोस्त-यारों या अपने घर पड़ोस में ही सुनी होगी, पर कभी इस असंभव माने जाने वाले काम को संभव बनाने के बारे में तुमने सोचा है? शायद नहीं! चलो, तो अब हम इस कहावत को एक छोटे से भौतिकी प्रयोग से संभव बना ही देते हैं!

आवश्यक सामान:

(1) एक महीन तारों और लगभग 1 मि. मी. मोटे छेदों वाली लगभग 15 सेंटीमीटर चौड़ी चलनी (2) एक स्टोव (3) एक बर्तन (4) पैराफीन (पैराफीन अपनी उ. मा. शा. की प्रयोगशाला या बाजार में किसी केमिस्ट की दुकान पर मिल सकता है।)

सबसे पहले पैराफीन को बर्तन में डालकर स्टोव पर गर्म करो। अब इस गर्म पिघले पैराफीन में चलनी के निचले हिस्से को डुबाकर निकाल लो। चलनी के तारों को पैराफीन की पतली परत ढक लेगी, पर यह परत तुम्हें इतनी आसानी से दिखेगी नहीं। दिखेगी भी तो बहुत मुश्किल से। हां, पैराफीन में डुबोने पर भी चलनी चलनी ही रहेगी, ऐसा नहीं कि उसके छेद बंद हो जाएंगे। तुम चाहो तो सुई की मदद से इसकी परख कर सकते हो।

बस, अब तुम चलनी में पानी भरकर लोगों को हैरत में डाल सकते हो! ऐसी चलनी में पानी की काफी मोटी परत को रोक रखने की क्षमता होती है, पानी छेदों से होकर नीचे नहीं गिरता। शर्त ये है कि चलनी में पानी डालते वक्त बहुत सावधानी और कुशलता रखनी होगी। अगर चलनी के छेदों में पैराफीन की परत पर पानी की ठोकर लगी तो छेद खुल सकते हैं।

बताओ, चलनी से पानी क्यों नहीं गिरता? क्योंकि, पानी पैराफीन से चिपकता नहीं है (उसे भिगोता है)

और इसीलिए चलनी के छेदों के पास महीन झिल्लियां बनाता है, जिनकी निचली सतहें नीचे की ओर उत्तल होती हैं। ये झिल्लियां ही पानी को गिरने से रोकती हैं।

यह प्रयोग उन अनेक सामान्य घटनाओं को समझाता है, जिनके हम इतने आदी हो गए हैं कि उनके कारणों के बारे में सोचते भी नहीं, और न ही उनमें हमें "चलनी में पानी भरने" जैसा कोई कौतूहल ही नजर आता है। नावों और पीपों पर कोलतार पोतना, ठेपी और कागों पर तैलीय पदार्थ लगाना, वस्तुओं को जल-सह बनाने के लिए उनकी सतह को तैलीय कर देना, यह सब चलनी में पानी भरने जैसी घटनाएं ही तो हैं!!

जादू दिखाओ

सबसे पहले यह काम करो : एक ऐसा डिब्बा लो जिसका ढक्कन कड़ा हो। डिब्बे से ढक्कन को अलग करके उसमें पन्द्रह-बीस छेद करो। डिब्बे के पैंदे में भी एक छेद करो। इतना करने के बाद अपने दोस्तों को इकट्ठा करो और जादू (हाथ की सफाई) दिखाओ।

सबसे पहले डिब्बे के पेंदे में किए गए छेद को अपनी उंगली से दबाकर डिब्बे में पानी भरो, फिर डिब्बे का ढक्कन जिसमें छेद किए गए हैं, डिब्बे में लगा दो। अब पेंदे के छेद को बड़ी चालाकी से दबाए हुए ही डिब्बे को उल्टा कर दो। अब स्थिति ऐसी होगी कि डिब्बे की पेंदी ऊपर और उसका छेद तुम्हारी उंगलियों में दबा होगा और नीचे बहुत से छेद होने के बावजूद भी पानी नहीं गिरेगा। तुम्हारे दोस्त आश्चर्य चकित हो जाएंगे।

अब तुम कहो, पानी गिरो। इतना कहकर तुम जिस छेद को उंगली से दबाए हो वहां से उंगली हटा लो। पानी गिरना शुरू हो जाएगा पर छेद से उंगली सफाई से हटाओ। कोई तुम्हारी उंगली को हरकत करते न देख ले। फिर बोलो,पानी बंद हो जा।इतना कहकर छेद पर फिर उंगली रख दो। बस, पानी गिरना बंद हो जाएगा।

□ राकेश कुमार, सैनिक
आरंग, रायपुर

भविष्यवाणी मौसम की

दोस्तो, क्या तुमने कभी ऐसा कैलेण्डर या तस्वीर देखी है जो मौसम के बदलने की जानकारी पहले से ही तुम्हें दे दे? नहीं देखी तो लो, मैं तुम्हें इसको बनाने का तरीका बता रहा हूं।

आवश्यक सामान : एक कोई तस्वीर, ब्लाटिंग पेपर, नमक एव थोड़ा सा कोबाल्ट क्लोराइड

बनाने का तरीका : थोड़े से पानी में दो चम्मच कोबालट क्लोराइड और एक चम्मच नमक घोलकर उसमें ब्लाटिंग पेपर को डुबाओ, ताकि ब्लाटिंग पेपर इस घोल को अच्छी तरह से सोख ले। सूखने के बाद पेपर को तस्वीर के किसी ऐसे भाग पर चिपका दो जहां यह खूबसूरत लगे। यदि तुम्हारी तस्वीर किसी प्राकृतिक दृश्य वाली हो तो ब्लाटिंग पेपर को आकाश वाले हिस्से पर चिपकाना सबसे उपयुक्त होगा। क्योंकि सूखे हुए पेपर का रंग शुष्क मौसम में चमकीला नीला बना रहता है, पर जैसे ही नमी की संभावना होगी तो यह नीला रंग बदलकर लाल (गुलाबी) हो जाएगा। और इस तरह मौसम बदलने से पूर्व तुम उसके बारे में भविष्यवाणी कर सकते हो।

□ मुकुल विनायक सप्रे
लश्कर, ग्वालियर

खेल कागज का

कार्प मछली

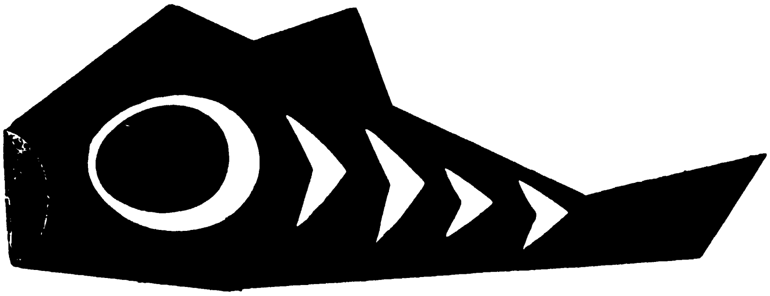

①

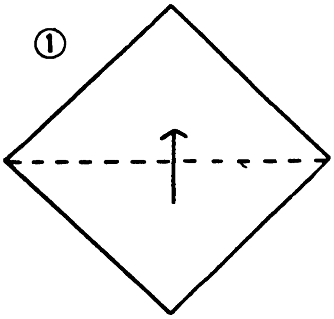

□ चित्र (1) में दिखाए गए तरीके से एक चौकोर घुटमा (रंगीन और मोटा) या साधारण कागज को अच्छी तरह से मोड़कर एक तिकोन बना लो।

②

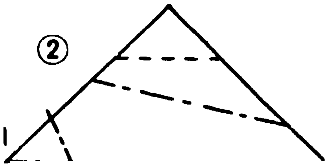

□ अब चित्र (2) में दिखाए अनुसार रेखाओं पर इस तिकोन को दोनों जगह से मोड़ लो।

□ अब चित्र (2) में ही दिखाई गई आगे निकली चोंच को अंदर की तरफ मोड़ दो।

③

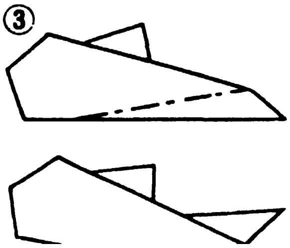

□ चित्र (3) में दिखाई गई रेखा को एक बार फिर मोड़ो। बस, अब रंगीन कागज को अंडे जैसा काटकर ऊपर दिए चित्र जैसी शक्ल बनाओ। बन गई न कार्प मछली?

एक मजेदार खेल

आओ हम तुम्हें एक अंकों का मजेदार खेल बताएं, जिसे तुम अपने दोस्तों को दिखाकर उनका मनोरंजन कर सकते हो।

सबसे पहले कागज या किसी स्लेट पर नीचे लिखे वाक्य को ज्यों का त्यों लिखकर नीचे बताए अनुसार 0 से 9 तक प्रत्येक अक्षर पर नंबर दर्शाओ।

"धाय चली हो कागज नैया"
01 23 4 567 89

अब अपने किसी दोस्त से तीन अंकों की एक संख्या बोलने को कहो, बशर्ते उसमें 0 न हो, और किसी अंक की पुनरावृत्ति भी न हो। (107, 119, 997 इत्यादि) अब उस संख्या के अंकों को उल्टे क्रम में लिखो। दोनों संख्याओं में से जो बड़ी हो उससे छोटी संख्या को घटाओ। प्राप्त संख्या के अंकों को पुनः उल्टे क्रम में लिखो और दोनों संख्याओं को जोड़ो। जोड़ने पर जो भी संख्या मिले, उसे 40 से गुणा करो। अब इस गुणनफल के अंकों को ऊपर दिए वाक्य के शब्दों में क्रमशः बदल कर लिखो। इससे एक मजेदार वाक्य प्राप्त होगा!

मान लो तुम्हारे दोस्त ने 531 कहा। इसके अंकों को उल्टे क्रम में लिखने पर मिलेगा 135। अब 531 में 135 को घटाओ तो 396 प्राप्त होगा। अब इसे पुनः उल्टे क्रम में लिखने पर 693 प्राप्त हुआ। दोनों अंकों को जोड़ने पर 396 + 693 = 1089 मिलेगा। अब इसे 40 से गुणा करने पर (1089 × 40) = 43560 प्राप्त होगा। अब इन अंकों को ऊपर के वाक्य के शब्दों में क्रमशः बदलकर लिखने पर निम्न वाक्य प्राप्त होगा :

"होली का गधा!"

□ विनोद पटैल, 11वीं
नटवर, रायगढ़

आश्चर्यलोक में एलिस

पिछले अंकों में तुमने पढ़ा

इंग्लैंड के एक हरे–भरे कस्बे में बाहर एलिस खेल रही थी। तभी उसने एक विचित्र खरगोश देखा जो वास्कट पहने अपनी घड़ी को बार–बार देख रहा था। वह जिज्ञासा से खरगोश के पीछे भागी। खरगोश तेजी से बिल में घुस गया, उसके पीछे एलिस भी। एलिस को लगा जैसे वह पृथ्वी के आर–पार बनी किसी सुरंग में गिर रही है और काफी देर बाद उसे ऐसा लगा जैसे वह पुआल के ढेर पर धम्म से गिरी हो। उसने अपने को एक बड़े से हाल में पाया। कुछ अजीब-सी घटनाओं से वह परेशान होकर रोने लगी। कुछ देर बाद उसे लगा कि वह अपने आंसुओं से बनी नदी में भीग रही है। इसी नदी में एलिस की मुलाकात एक चूहे व अन्य जानवरों से हुई।

एलिस और अन्य जानवर तथा परिंदे पानी में भींग गए थे। सब ठंड से ठिठुर रहे थे। मूसजी ने इतिहास का एक पाठ पढ़ाना शुरू किया, ताकि सब सूख जाएं। पर ठंड दूर नहीं हुई। डोडो बत्तख ने प्रस्ताव रखा कि सब लोग परिषद् गुट्ट की दौड़ लगाएं। दौड़ के बाद सबको इनाम में टाफी बांटी गई। सबकी फरमाईश पर मूसजी ने एक किस्सा सुनाना शुरू किया। मूसजी बीच में रूठ गए। बातों–बातों में एलिस ने अपनी दीना पूसी का नाम ले दिया। पूसी का नाम सुनकर चिड़ियों में खलबली मच गई और एक–एक करके सब खिसक गए। एलिस ने उन्हें रोकने की बहुत कोशिश की पर कोई न रूका। थोड़ी देर बाद एलिस को किसी के पैरों की आवाज सुनाई दी। उसने देखा वही सफेद खरगोश घबराया हुआ–सा आ रहा है। अब आगे पढ़ो......

एलिस ने उसे अच्छी तरह पहचान लिया। वही था–घबराया हुआ-सा। उसने सोचा–बेचारा जाने क्या ढूंढ रहा है?

सफेद खरगोश कहता आ रहा था, 'कहां गिरा दिए होंगे मैंने? कहां गिर गए होंगे मुझसे? अबकी तो जिंदा न छोड़ेंगी मलका महारानी!' फिर कुछ रुआंसा होकर बोला, 'ओह, अब तो जरूर सूली पर चढ़ाया जाऊंगा!'

एलिस ने दिल में कहा, 'हाय, कैसी जालिम हैं मलका....! बेचारा!

एकाएक उसे कुछ याद आ गया। 'अरे, हां, उसने आप ही आप कहा। कहीं वह दस्ताने और पंखा तो नहीं ढूंढ रहा है? वही जो मेरे हाथ में थे–उस हॉल में–जहां रो-रोकर मैंने आंसुओं की झील बना ली थी। हाय, अगर न मिले, तो बेचारा मारा जाएगा!'

एलिस को चिन्ता हो गई। वह सोचने लगी कि आखिर पंखा और दस्ताने कहां छूट गए होंगे? भला किधर होगा वह हॉल वाला घर?

सफेद खरगोश को उसकी आहट जो मिली तो दूर से

ही कड़ककर पूछा, "कौन है उधर? मैरी-ऐन? मैरी-ऐन! जा तो जल्दी से भागकर और मेरे कमरे से एक जोड़ी दस्ताने और पंखा ले आ। समझी?"

एलिस को बड़ा अजीब लगा कि उसने जल्दी में उसे पहचाना ही नहीं। 'हाय, मैं मैरी-ऐन हूं?' उसने अपने आप से कहा।

मगर वह वहां ठहरी नहीं। एक तरफ को भाग निकली।

सफेद खरगोश ने पीछे से पुकारकर फिर आदेश दिया, "दौड़के जा! जल्दी कर! पंखा और एक जोड़ी दस्ताने! मेरे ऊपर वाले कमरे में होंगे!"

एलिस दौड़ते हुए मन ही मन कहने लगी, 'वाह-वाह! और लो! मैं एक खरगोश की नौकरानी भी हो गई। यह अच्छी रही! मगर जब उसको पता लगेगा कि मैं कौन हूं तब वह भौचक्का रह जाएगा। हां! ... मगर मुझे जल्दी करनी चाहिए। नहीं तो बेचारा ...!'

एकाएक उसने देखा कि सामने ही घर है। दरवाजे के बाहर नाम की तख्ती लगी हुई है। उसने पास जाकर पढ़ा-

'एस. खरगोश, इस्क्वायर'

ओहो! मिस्टर सफेद खरगोश साहब!

वह सोचने लगी, 'खटखटाऊं या न खटखटाऊं? अगर कहीं असली मैरी-ऐन अंदर से निकल आई, तब!'

उसने खटखटाया नहीं। हलका-सा धक्का दिया। दरवाजा चूं की आवाज़ करता हुआ धीरे-से खुल गया। एलिस सीढ़ियां चढ़कर ऊपर पहुंची।

ऊपर पहुंचते ही उसने आश्चर्य और प्रसन्नता से देखा कि दस्तानों के कई जोड़े रखे हैं; पंखा भी वहीं रखा

'बिलकुल ऐन-मैन वैसा ही है!' उसने कहा। '.... और यह क्या चमक रहा है? शीशी! अच्छा! इस पर भी लेबल लगा हुआ है– 'मुझको पी लो!' खुशबू तो बड़ी अच्छी आ रही है! बड़ी खट्टी-मीठी-सी। पीकर देखती हूं।'

'अहा! अब मैं जरूर बड़ी हो जाऊंगी!' मैं भी तो तंग आ गई हूं अपने इस नन्हे-मुन्ने कद से! देखो न, मैं तो अपनी गुड़िया से भी छोटी हो गई। यही हाल रहा तो खरगोश की तरह कल को दीना पूसी भी मुझसे अपने काम कराया करेगी। जब आया मुझे पुकारेगी, मिस एलिस जल्दी तैयार हो जाओ! घूमने का वक्त हो गया! तब मुझे कहना पड़ेगा, आई, बस पांच मिनट रुक जाओ! मुझे दीना पूसी के आने तक यहीं रहना है। 'हां, मगर एक बात है,' उसने गौर करके देखा, 'वह ऐसे ही अगर हुक्म चलाने लगी तो कोई उसे घर में रहने भी नहीं देगा। हां!'

एकाएक उसका सर ठक् से छत में लगा!, 'अरे, यह क्या हुआ? क्या मैं छत तक पहुंच गई? हाय, मैं बहुत ज्यादा पी गई! और मैं तो बढ़ती ही जा रही हूं। हाय अम्मा! यह लो, अब तो कुहनी के बल झुककर बैठना पड़ेगा। और ये पांव किधर जाएंगे?'

उसने एक तरकीब लगाई। 'एक पांव को कार्नेस की चिमनी में अड़ाकर देखती हूं। ....अरे, अब यह हाथ फैलने लगा ...इसे तो बस खिड़की के बाहर निकाल दूं।'

'अब कुछ ठीक हुआ,' उसने सोचा। 'क्या मैं अभी और बढूंगी? फंस तो गई पूरी की पूरी इस कमरे में!'

इतने में दरवाजे पर खटखट की आवाज हुई। वह चौंकी। 'हाय, दरवाजे पर कौन है?'

सफेद खरगोश बाहर से, पुकार रहा था. "मैरी-ऐन! मैरी-ऐन की बच्ची, क्या कर रही है? जल्दी

कर! दस्ताने जल्दी ला!"

दरवाजे पर धक्का मारने की आवाज आई। "यह दरवाजा आज खुलता क्यों नहीं," सफेद खरगोश भुनभुना रहा था।

"और मैरी-ऐन कहां मर गई! कोई बोलता ही नहीं! जाऊं खिड़की की तरफ देखूं!"

एलिस को उसके पैरों की आवाज से मालूम हो गया कि वह खिड़की वाले हाथ के नीचे पहुंच गया। 'अच्छा देखूं,' उसने सोचा, 'मेरे हाथ में आता है कि नहीं!'

उसे छूने के लिए एलिस ने अपना हाथ हिलाया।

सफेद खरगोश एकदम भय से चीखा। "हुई-ई! यह क्या बला है!" और लड़खड़ाकर पीछे की ओर नाजुक फूलों के कांचघर के ऊपर गिरा। कांच के फ्रेम टूट गए और वह उनमें फंस गया।

एलिस को बड़ी खुशी हुई। 'खूब गिरा!' उसने कहा!

उधर वह अपनी मदद के लिए पुकार रहा था, "पैट!पैट! यू माली! तुम किधर मर गया!जरा इधर आओ।"

झाड़ियों के पीछे से बहुत दूर से आवाज आई, "हुजूर, मैं यहां हूं! जमीन से सेव खोद रहा हूं।"

खरगोश ने चिढ़कर गुस्से से उसकी नकल उतारते हुए कहा, "जमीन में सेव खोद रहा हूं! सेव का बच्चा! इधर निकाल मुझे यहां से! हाय, कहां फंस गया!"

एलिस और भी खुश हुई। बोली, 'अच्छा, उसको भी आने दो!'

पैट जो उस खिड़की के नीचे आया, तो हाथ के हिलने से वह भी भयभीत होकर उलटा गिरा, और पहले से भी ज़्यादा कांच टूटने की आवाज हुई।

पैट चिल्लाया, "हाय दादा! हाय बपई! मर गए! सब कमर हिल गई!"

सफेद खरगोश- अबे रो मत। देख, जरा बता तो, यह ऊपर की खिड़की से निकलकर क्या हिल रहा है।

पैट (घबराकर)- हुजूर, यह तो पंजा है। किसी आदमी का पंजा है।

सफेद खरगोश- आदमी का पंजा! अबे इतना बड़ा आदमी का पंजा होता है कहीं? पूरी खिड़की के बराबर!

पैट- हुजूर, अब चाहे जो हो, है आदमी का पंजा ही।

सफेद खरगोश- मगर वहां अंदर क्या काम है इसका? हम नहीं जानते! जो कुछ हो, जाकर हटाओ

उसको वहां से!

पैट ने काम टालने के लिए, गिड़गिड़ाकर, बातें बनाते हुए कहा, "हुजूर, अच्छा तो हमको भी नहीं लगता उस खिड़की में यह हाथ! बहुत बुरा लगता है।"

"डरपोक कहीं का!" मालिक ने डांटा।

एलिस उनकी बातें अच्छी तरह सुन रही थी। बोली, 'आओ! आओ! आओ! और नजदीक आओ!'

खरगोश और पैट दोनों की एक साथ चीख निकल गई।

पैट- हाय रे बाप, मर गए!

खरगोश- हुई-ई! तब नहीं तो अब मरे!

कुछ देर सन्नाटा रहा। सिर्फ़ कहीं नल से टप-टप करके पानी गिर रहा था। कोई कौवा दूर पर बोल रहा था।

एलिस ने दिल में कहा, देखूं, कब क्या करते हैं! अच्छा है मुझे इस बंद घर से निकाल लें। निकालें भी तो! मैं तो आप नहीं चाहती यहां रहना।

मकान के चारों तरफ भीड़ इकट्ठी होने लगी और शोर बढ़ने लगा। सीढ़ी लगाकर किसी को ऊपर चढ़ाने

की योजना थी। बातें इस तरह हो रही थीं-

''दूसरी सीढ़ी कहां है?''

''मुझसे तो एक ही कहा था लाने को। फिर मैं अकेला दो-दो कैसे लाता? .... दूसरी वह है बिल के पास ... उधर।''

''बिल भैया, इधर लाओ अपनी सीढ़ी!''

''इनको इस किनारे लगाओ!''

''दोनों को बांध दो पहले, नहीं तो आधी दूर भी नहीं पहुंचेंगी!''

''अच्छी तरह कसकर बांधना, हां!''

''अरे बिल भैया, पकड़ना जरा इस रस्सी को!''

''पहुंच जा मेरे शेर, छत पर!''

''देखकर! खपरैल कहीं गिरे नहीं! उधर से उखड़ी है।''

''बचाना सर वह गिरी किसके लगी? बच गए!''

सफेद खरगोश ने चिल्लाकर पूछा, ''किसने गिराई खपरैल?''

जवाब- ''हजूर, बिल है ऊपर!''

''बिल भैया, तुम चिमनी से नीचे उतर जाओ!''

बिल- मैं जाऊंगा? नहीं, नहीं! पैट मझसे पतला है। वही ठीक रहेगा।

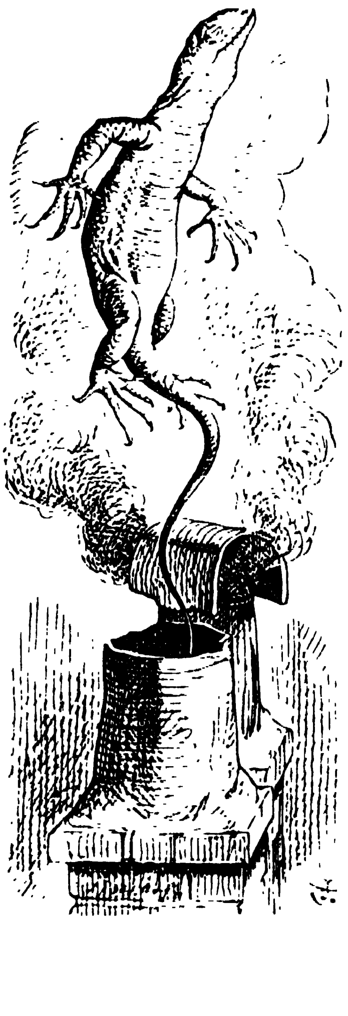

''अब डरता है जरा-से काम में? चल, घुस चिमनी के अंदर!'' सफ़ेद खरगोश ने डांटा।

बिल- जा रहा हूं, हुजूर, जा रहा हूं।

जब वह डरते-डरते चिमनी के अंदर घुस गया, तो लोग आपस में इस तरह बातें करने लगे-

''कोई दूर थोड़े ही गया होगा,'' एक ने कहा।

दूसरा- वहीं चिपका बैठा होगा।

पहला- ऊपर ही!

सफेद खरगोश ने चिल्लाकर आदेश दिया, ''अबे नीचे तक जाना!''

''अच्छा जी!'' बिल की आवाज आई, जैसे कोई कुएं के अंदर से बोले।

एलिस ने जरा-सा खांसकर आप ही आप कहा, 'बिल ही की जान सस्ती है, बेचारे की!'

सब दम साधे चुप थे। देख रहे थे कि अब क्या होना है।

एलिस को लगा जैसे कोई चिमनी के अंदर धीरे-धीरे नीचे को सरकता हुआ आ रहा है। उसने अंदाज से सोचा, शायद कोई बड़ी-सी छिपकली है। उसे चिंता हो गई। 'अगर उसने तलुवे में कुछ चुभो दिया, तब? अच्छा लो अभी एक ठोकर में उसे बाहर करती हूं!' जब उसने सोचा कि यह 'बिल' अब उसके पांव के अंगूठे के पास आ गया होगा, तब उसने एक जोर की ठोकर उसे नीचे से मारी।

बाहर एकदम शोर मचा।

''ए-ए-ए-य .... लो!''

''वो गया बिल सी ... धा! चिमनी के पार। जैसे तीर जाए!''

दौड़कर लोग बिल के पास गए, जहां वह गिरा था।

सब अपनी-अपनी कह रहे थे, ''देखो, कहीं सर तो नहीं फटा!'' ''नहीं, सर तो बच गया।'' ''और देखो, भैया बिल बेहोश हैं। अभी बुलाओ नहीं!'' ''पानी लाओ पानी! पानी!'' ''हां, छींटे दो!'' ''आंख खोलो तो!'' ''नहीं चोटें ज्यादा नहीं आईं।'' ''धक्का लगा है'' ''नहीं चोट अंदरूनी है!'' ''बिल भैया, कैसा हाल है?''

बिल ने धीरे से एक आंख खोली।

''ये सर्र से ऊपर कैसे चले गए?'' ''सर थामे रहे, थामे रहो!'' ''छांह में ले चलो, छांह में!'' ''ये गए कैसे तीर-से, और एकदम ऊपर, जैसे कोई गेंद उछाले!'' ... ''कहो भैया बिल, कैसा हाल है?'' किसी ने बहुत हमदर्दी

से पूछा।

बिल ने बहुत भरी हुई आवाज़ में उत्तर दिया, ''पता नहीं ... अह-अह ... कैसे ... एक जोर का ... अह-अह ... धक्का ... अह-अह ... नीचे से ...''

और लोगों ने उसे रोका। ''अभी बोलो नहीं, बोलो नहीं! ... जरा हवा लगने दो!''

बिल- (उसी आवाज में)- अह-अह, अब जी कुछ ठीक है। अह ...

सफेद खरगोश ने वहां पहुंचकर हुक्म दिया, ''चलो, कुछ लोग इधर आओ! अब इस घर में आग लगानी पड़ेगी। और कोई चारा नहीं।''

एलिस ने सुना तो क्रोध से भर उठी। जोर से बोली, ''अच्छा लगाओ आग! मैं भी दीना को तुम्हारे पीछे छोड़ूंगी।''

यह सुनते ही जैसे सबकी नानी मर गई। सन्नाटा छा गया।

एलिस ने मन ही मन कहा, 'देखूं, अब क्या करते हैं। इन्हें यह नहीं सूझती कि छत ऊपर से हटा दें।'

लोग फिर धीरे-धीरे खुसुर-पुसुर करने लगे थे। सफेद खरगोश धीरे से बोला, ''छकड़ा-भर काफी होगा।''

एलिस के कान खड़े हुए। 'एं! छकड़ा भर! छकड़ा-भर क्या?'

अब वे लोग पड़ापड़ पत्थर जैसी कोई चीज अंदर फेंकने लगे।

एलिस घबराई। 'हाय, ये तो खिड़की में पत्थर फेंक रहे हैं!' उसने कहा। 'हाय, हाय, आंख गई थी अभी! ... हाय, मेरी नाक! ...'

फिर वह गुस्से से चिल्लाकर बोली, ''बंद करो अभी! इसी दम! नहीं तो याद रखो, मैं ...''

इतना सुनते ही एकदम फिर शांति छा गई।

एलिस ने भुरभुरा चूरा-सा अपने मुंह पर देखा तो बहुत चकित हुई। 'हैं! यह चूरा-सा क्या है होंठों पर? इसका स्वाद तो बिस्कुट जैसा लग रहा है। अरे, तो ये पत्थर नहीं थे क्या! कैसी अजीब दुनिया है यहां की! स्वाद तो अच्छा है। एक खाकर देख लूं। जरूर इसके खाने में मैं फिर छोटी हो जाऊंगी!'

उसने एक बिस्कुट मुंह में रख लिया। थोड़ी ही देर में उसका चेहरा खिल उठा। 'आह, अब जरा पांव सीधे हुए। गर्दन सीधी हुई। बस, अब और छोटी नहीं हूंगी शायद। ज़रा-सा झांककर देख लूं , क्या कर रहे हैं ये लोग! इनके हाथ पड़ गई तो ये जीता न छोड़ेंगे मुझे!'

दरवाजे को जरा-सा खोलकर उसने बाहर झांका और देखा कि बड़ी भारी भीड़ इकट्ठा है। 'ये सब किसे घेरे हुए हैं? वह बिल ही होगा, 'उसने सोचा। 'उसी की तीमारदारी में सब लगे हैं। अरे,यह बिल तो गिरगिट है, गिरगिट! ये क्या पिला रहे हैं! बेचारा नीला पड़ गया है।'

निकल भागने का यह अच्छा मौका था।

'इस समय कोई नहीं पकड़ पाएगा मुझे!' यह सोचकर उसने जल्दी से दरवाजा खोला और तेजी से निकलकर भागी।

भीड़ में से चार-छः लोग उसके पीछे लपक लिए।

''वो गई! वो गई!'' ''लेना, जाने न पाए!'' ''वो निकल गई!'' सब हल्ला मचाने लगे।

''कैसी सरपट भागी है!'' ''अब हाथ आ चुकी है!'' ''वो गई!'' ''गई वो तो!'' ''बस गई!''

एलिस वहां से बहुत दूर निकल आई थी, मगर अब भी हांप रही थी। उसने दिल में सोचा कि 'पहला काम तो यह करना है कि किसी तरह अपने असली कद में आ जाऊं। और दूसरा यह कि ... वह फूलों वाला बाग कहां है, देखूं।'

इतने में उसके कानों में कहीं से एक पिल्ले के भौंकने की आवाज आई। वह चौंकी और उसे कुछ खुशी भी हुई। 'हाय कोई नन्हा-सा कुत्ते का बच्चा है! कैसी प्यारी नन्ही-सी आवाज है!'

फिर उसने बहुत ही नजदीक से उसके भौंकने की आवाज सुनी— भौं! भौं! भौं!

वह डर गई। 'हाय, यह तो बिलकुल पास ही आ गया। मैं तो डर गई थी। कैसा बड़ा-सा है, झबरा-झबरा! मगर है पिल्ला!'

एकाएक अनजाने में ही उसके मुंह से कुत्ते को बुलाने वाली सीटी की आवाज निकल पड़ी। एलिस उसको अपनी तरफ आते हुए देखकर बड़ी खुश हुई।

'हाय, यह तो दुम हिलाने लगा। कैसा प्यारा-सा है! तुहू! तुहू! तुहू!'

पिल्ला उसे देखकर और भी खुशी से भौंकने लगा। एलिस को लगा कि पिल्ला खेलना तो चाहता है, मगर अभी डरता है।

'देखूं, इस लकड़ी से खेलेगा कि नहीं!' उसने एक लकड़ी उठाकर उसके आगे की। मगर वह इतने ज़ोर-से भौं-भौं करने लगा कि एलिस खुद सहमकर पीछे हट गई।

'हाय, यह कहीं मुझे रौंद न दे! यह इसे हड्डी समझ रहा है, शायद। मुझे रौंदने आएगा तो मैं इस भटकटैया के पीछे छिप जाऊंगी,' उसने मन ही मन तय किया। 'तुहू! तुहू! तुहू!'

पिल्ला अब और भी ज़ोर से भौंकने लगा।

'उई अम्मा! यह तो सर पर ही आ गया था। कैसे बड़े-बड़े दांत हैं! मुझे तो डर लगता है, कहीं मुझे जरा-सी गुड़िया समझकर झंझोड़ने न लगे। मैं तो भागूं यहां से!'

''भौं! भौं! भौं!''

वह एकदम दूर हट गई; दूर से ही उसका खेल देखने लगी।

'कैसा लकड़ी से आप ही आप खेल रहा है, और उसी पर गुस्सा भी आ रहा है! अब निकल चलूं यहां से, ऐसे में। नहीं तो फिर सर पर आ जाएगा।'

धीरे-धीरे एलिस दूर निकल आई। पिल्ले की आवाज बहुत पीछे रह गई।

'कैसी शांति है यहां!' उसके मुंह से निकला। 'यहां कोई मेरे पीछे नहीं पड़ेगा। मगर पहले तो कोई चीज मिलनी चाहिए खाने की या पीने की... जिससे मैं फिर अपने असली कद में आ जाऊं।.... मगर यहां तो ऐसी कोई भी चीज नजर नहीं आती। उस तरह की कोई चीज़ नहीं है। ढेर सारे कुकुरमुत्ते हैं, जो सब मेरे बराबर हैं। या मुझसे बस जरा ही छोटे होंगे।'

वह यह सब सोच ही रही थी कि उसने देखा, एक कुकुरमुत्ते के ऊपर कोई बैठा गुड़गुड़-गुड़गुड़ कर रहा है।

'हुक्का पी रहा है क्या?' एलिस ने सोचा। 'जरा और उचककर देखूं।' उसे बड़ा आश्चर्य हुआ। वही बात थी।

'हां, रे!' उसके मुंह से निकला। 'यह तो कोई रेशम का कीड़ा (इल्ली) मालूम होता है। सचमुच ही हुक्का पी रहा है! बुड्ढों की तरह बैठा—मुंशीजी बना हुआ!.... कहीं मुझे डांटेगा तो नहीं कि मैं क्यों मुंशीजी की शांति में विघ्न डाल रही हूं।'

रेशम का कीड़ा, हुक्के का एक कश लेकर, बड़े इत्मीनान से मोटे स्वर में बोला, ''कौन?''

एलिस ने अचकचाकर कहा, ''मैं...मैं... इस समय तो पता नहीं, मैं क्या हूं। हां, सुबह की बता सकती हूं कि मैं क्या थी। तब से अब तक तो दिन-भर में इतनी बार

बदल चुकी हूं कि क्या बताऊं!''

रेशम का कीड़ा, एक गम्भीर बुजुर्ग की तरह बोला, ''क्या मतलब?''

एलिस—मैं अपने आपको समझा नहीं सकती, क्योंकि देखिए न, मैं अब मैं रही ही नहीं हूं।

रेशम का कीड़ा—मैं यह नहीं समझता।

एलिस—क्षमा कीजिएगा, मैं अपनी बात को साफ ढंग से कह नहीं पा रही हूं। मेरी खुद कुछ समझ में नहीं आ रहा है। सुबह से मैं इतनी बार छोटी हो चुकी हूं कि सब गड़बड़ हो गया है।

रेशम का कीड़ा—इसमें गड़बड़ क्या है?

एलिस—अभी आपको पता नहीं है। जब आप **रेशम का कोया** बन जाएंगे, और उसके बाद जब एक तितली का रूप धारण करेंगे...... तब आपको यह मालूम होगा कि यह सब कितनी अजीब बात है! हां! तब पता चलेगा आपको!

रेशम का कीड़ा—बिलकुल नहीं।

एलिस—तब फिर शायद आपका मन ही दूसरी तरह का है। यह सब अदलना-बदलना मुझे तो बड़ा अजीब लगता है।

रेशम का कीड़ा ('मुझे' शब्द से चिढ़कर)—मुझे! यह 'मुझे' क्या है? तुम हो कौन?

एलिस ने अपने मन में कहा, 'बड़ा अजीब आदमी है!' फिर कुछ रुककर बोली, ''पहले जनाब, आप बताइए कि आप कौन हैं?''

रेशम का कीड़ा—क्यों?

एलिस ने आप ही आप कहा, 'बड़ी मुश्किल है! मैं तो तंग आ गई इससे। मैं तो चलती हूं यहां से। ऐसे से कौन बात करे! उंह!'

इतने में रेशम की कीड़ा बोल उठा—''लौट आओ। एक जरूरी बात कहनी है।''

एलिस—क्या जरूरी बात है?

रेशम के कीड़े ने एक कश लेकर और एक क्षण रुककर कहा, ''शांत रहो!''

एलिस—बस यही बात कहनी थी?

रेशम का कीड़ा—नहीं।

एलिस ने कुछ देर इंतजार किया कि शायद वह और कुछ कहे। मगर वह केवल हुक्का गुड़गुड़ाए जा रहा था, बड़े इत्मीनान से।

आखिरकार वह बोला, ''तो तुम्हारा ख्याल है कि तुम बदल गई हो?''

एलिस—जनाब, मैं तो यही सोचती हूं। सब बातें मुझे जिस तरह से याद रहा करती थीं, उस तरह से अब याद ही नहीं रहतीं। और घड़ी-घड़ी मेरा कद बदलता रहता है; कभी बड़ा हो जाता है, कभी छोटा।

रेशम का कीड़ा— क्या बातें याद नहीं रहतीं?

एलिस— अब जैसे वह कविता है न, 'नन्ही-मुन्ही शहद की मक्खी, कहां-कहां तुम जाती हो' उसे दोहराती हूं तो ... वह है कुछ, निकलता है कुछ!''

रेशम का कीड़ा— अच्छा, 'दादा विलियम,, दादा विलियम' तो सुनाओ!

एलिस ने पहले अपना गला जरा ठीक किया। फिर इस तरह वह कविता सुनाने लगी—

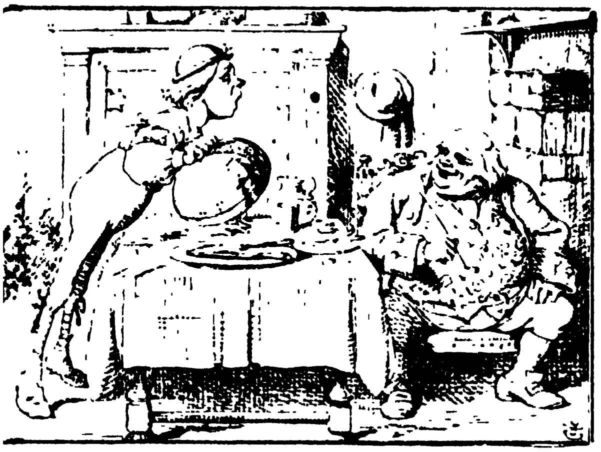

'दादा विलियम, दादा विलियम, तोंद तुम्हारी गोल मटोल,
रहे–सहे सब बाल उड़े–से; उस पर है यह कैसी गत-

जो सर के बल उलटे होकर खड़े हुए हो देही तोल!
अच्छी–भली बुढ़ौती में भी है यह कैसी उलटी मत?'

दादा विलियम बोले 'बेटा, जब कसरती जवानी थी,
एक यही भय था कि पिचक्कर बुद्धि न जाए कहीं निकल!

ठटरी अब तो खाली मेरी, और खोपड़ी भी गंजी,
इसीलिए निश्चिन्त खड़ा रहता हूं घंटों सर के बल!'

पुनः युवक ने पूछा 'दादा, जब तुम आते अपने घर,
पेट संभाले नहीं संभलता, किन्तु अचम्भा होता सोच-

कैसे उलटी तीन कलाबाजी में आते गद्दी पर!
क्या कारण है, गए बुढ़ापे में भी है जो इतना लोच?'

केश हिलाकर दादा बोले-'बेटा, भरी जवानी थी।
देह चमत्कारी तेलों की मालिश से चिकनाई थी।

तभी लोच है इतना अब तक! उन तेलों की कुछ शीशी।
बाकी हैं, क्या तुम भी लोगे?-रुपै–रुपै की आई थीं!'

पुनः युवक ने पूछा-'दादा, दाढ़ें, हारीं, दांत गए,
क्या जाने क्या मुंह में रक्खे घंटों चूसा करते हो।

फिर भी देखो, सालिम मुर्गा चोंच समेत डकार गए।
कैसा अचरज है यह बाबा, हम तो मान गए तुमको!'

दादा बोले-'बेटा, मैं उन दिनों बड़ा कानूनी था।
बड़ी बहस दिन–रात हुआ करती थी तब घरवाली से।

दांत चबाकर रह जाते थे एक-दूसरे पर दोनों,
जबड़े लोहा हैं तो उसी अदालत की दल्लाली से!'

पुनः युवक ने पूछा-'दादा, आंखों से बहता है मल।
फिर कैसी नजर गड़ाए देख रहे हो ऊपर को!

गोल नाक पर खड़ी हुई है, सर्पा–मछली दुम के बल!
दादा, कला कहां सीखी यह, भला बताओ तो हमको!'

दादा बिगड़े-'तुझे दे चुका तीन सवालों का उत्तर!
बहुत हुआ बस! बड़ा कहीं का दादा वाला आया है!

बात बनाता है? चल भाग! नहीं वह पड़ती है सर पर,
जो तू भी क्या याद करेगा-कैसा पाठ पढ़ाया है!'

रेशम का कीड़ा—यह कविता किताब में तो ऐसे बिलकुल नहीं है।

एलिस ने सकुचाते हुए उत्तर दिया, "जी, बिलकुल ऐसे तो नहीं है। कुछ बातें कहीं-कहीं बदल गई हैं।"

रेशम का कीड़ा—नहीं, नहीं। शुरू से आखीर तक गलत है।

फिर वह मौन रहकर थोड़ी देर तक हुक्का गुड़गुड़ाता रहा।

"तुम कितनी लंबी होना चाहती हो?" आखिरकार उसने पूछा।

एलिस ने बड़ी उत्सुकता से बताया, "देखिए, लंबी चाहे जितनी हो जाऊं, मगर बात यह है कि बार-बार छोटी-बड़ी होना अच्छा नहीं लगता, यह तो आप भी जानते हैं।"

रेशम का कीड़ा—मैं नहीं जानता।

फिर कुछ देर तक हुक्के की गुड़गुड़ की आवाज होती रही और दोनों चुप रहे।

"अच्छा," रेशम का कीड़ा बोला, "तुम्हारा यह कद तो ठीक है?"

एलिस ने सकुचाते हुए कहा, "असल में, सर, मैं थोड़ी-सी, बस थोड़ी-सी और लंबी होना चाहती हूं। देखिए न, यह तीन इंच का कद भी कोई कद में कद है!"

रेशम के कीड़े ने खांसकर गंभीरता से कहा, "मुझको देखो, तीन इंच तो बहुत अच्छा-खासा है!"

एलिस ने बड़े विनीत स्वर में उत्तर दिया, "मगर देखिए, मुझे तो तीन इंच की बिलकुल आदत नहीं!"

रेशम का कीड़ा (एक कश लेकर)—धीरे-धीरे सब आदत पड़ जाती है। धीरे-धीरे सब आदत पड़ जाती है।

कुछ देर वह हुक्का गुड़गुड़ाता रहा। फिर गुड़गुड़ाना बंद करके उसने एक अंगड़ाई ली।

एलिस ने आश्चर्य से देखा कि हुक्का एक तरफ रखकर मुंशीजी नीचे उतर रहे हैं। शायद घास के अंदर कहीं अपने घर जा रहे हों।

जाते-जाते रेशम के कीड़े ने अपनी मोटी, गंभीर आवाज में कहा, "इसका एक किनारा लंबा कर देगा, एक छोटा!"

एलिस जाने किस ध्यान में थी। वह चौंक गई। 'हैं! यह इसने मुड़कर मुझसे क्या कहा? किसका एक किनारा? किसका दूसरा किनारा?'

रेशम का कीड़ा—कुकुरमुत्ते का।

एलिस बोली, "अच्छा? और... और..." 'मगर लो, वह तो गायब हो गया! कुकुरमुत्ते की छतरी तो गोल है।' वह सोचने लगी, 'फिर इसका किनारा भला कौन-सा होगा? कैसी अजीब बात है! देखो न, मुश्किल से इसका आधा घेरा मेरी बांहों में आएगा!'

फिर आप ही आप कुछ सोचकर उसने कहा, 'अच्छा, एक काम करूं। दाहिने हाथ से एक टुकड़ा तोड़ लूं, और बाएं हाथ में दूसरा! फिर देखूं, कौन क्या है?'

एक-एक टुकड़ा उसने दोनों तरफ से तोड़ लिया। 'पहले दाहिने हाथ वाला टुकड़ा खाकर देखूं!' उसने कहा।

खाने के थोड़ी देर बाद वह घबरा उठी। 'हाय, यह क्या हुआ! मेरी ठोडी, तो मेरे पंजे से चिपकी जा रही है। हाय-हाय, जल्दी से दूसरा खाऊं! ऊं-ऊंह!'

जल्दी में दूसरा टुकड़ा तोड़ा, और बड़ा चैन महसूस किया। 'अब जरा सांस मिली,' उसने कहा। 'मैं तो बिलकुल एक-बटा दस इंच हो गई थी।'

अब वह मगन होकर अपनी ऊंचाई को देखने लगी। 'अहा! अब मेरा सिर खूब ऊपर जा रहा है!, आह, कैसी आजादी यहां मिल रही है!'

मगर उसे चिंता भी होने लगी। 'ओहो, क्या मेरी गरदन सीधी..... सीधी बादलों तक पहुंच जाएगी? अरे, मेरे कंधे तो नीचे ही रह गए झाड़ियों में! और, यह लो, कैसी मेरी गरदन हवा में दूर तक लहरा रही है! कहीं इन ऊंचे पेड़ों की डालों से उलझ न जाए!

एकाएक उसे परों की फड़फड़ाने की आवाज आई। पहले बहुत दूर से, फिर धीरे-धीरे पास से। 'यह कबूतर मंडरा रहे हैं क्या, मेरी गरदन के चारों तरफ? फिर घबराहट में उसने कहा, 'हाय, ये पंख क्यों मार रहे हैं मेरी गरदन में?'

एक कबूतर ने चिल्लाकर उससे कहा, "सांप रे सांप! भाग यहां से! भाग यहां से!"

एलिस—अरे, मैं सांप नहीं हूं! मुझसे मत टकराओ!

कबूतर—सांप तो हो ही! लहराता हुआ सांप! बस, हटो यहां से! ... हाय, क्या मुसीबत है! इन सांपों से कहीं भी पनाह नहीं!

एलिस—यह तुम क्या कह रहे हो? मेरी समझ में खाक नहीं आता। ऊंह!

कबूतर झल्लाकर अपनी कहे जा रहा था, 'कहीं भी जाओ, कुछ भी करो—ये लोग पीछे-पीछे! पेड़, झाड़ी, नदी का किनारा, सब जगह मौजूद! हाय क्या करें? अंडे सेना ही कम मुसीबत नहीं थी! तीन हफ्तों से तो हमारी

नींद हराम हो रही है!"

एलिस ने सोचा, 'ऊंह, जाने कहां उलझ गई है मेरी नीचे की गरदन! शायद किसी डाल में फंस गई थी।' फिर वह कबूतर से बोली, "भई कबूतर, मैं सच कहती हूं, मैं सांप नहीं हूं। मैं तो एक छोटी-सी लड़की हूं।"

कबूतर—ज़रा सुनो तो इसकी बात! कहती है, 'छोटी-सी लड़की हूं! जैसे हमने लड़कियां देखी ही नहीं! फिर तुम कहने लगोगी कि मैंने तो अंडा कभी चखा ही नहीं!'

एलिस—नहीं भई, अंडा तो मैंने जरूर चखा है। मगर छोटी लड़कियां भी तो अंडे खाती हैं, अगर सांप खाते हैं तो?

कबूतर—नहीं, नहीं, नहीं! सब वाहियात बात! और अगर खाती हैं तो वह भी एक तरह की सांप ही हैं। हां... हमें खूब मालूम है, तुम गरदन ऊंची कर-करके पेड़ों में मेरे अंडे ही ढूंढ रही हो! बस, चाहे तुम लड़की हो या सांप, कोई भी हो, तुम्हारा काम क्या है यहां, हमारे घोंसलों के पास?

एलिस—मैं क्यों होती सांप? और फिर मैं कच्चे अंडे थोड़े ही खाती हूं? छिः और तुम्हारे अंडे तो मैं छूऊं भी नहीं!

कबूतर— अच्छा तो फिर भागो यहां से, मेरे पेड़ के पास से।

यह कहकर वह जोर-जोर से अपने पर उसकी गरदन में मारने लगा।

एलिस परेशान हो गई। उसने विनती करके कहा, "मुझे दिक मत करें, मैं अभी हटती हूं यहां से। उफ यह गरदन फिर न जाने किस डाल में उलझ गई नीचे! .... अरे, मैं कहती हूं, मुझे दिक मत करो, मैं जा रही हूं भाई, जरा अपनी गरदन उस नीचे वाली डाल से छुड़ा लूं! .... बस, हां!"

इस किस्से में एलिस अपने कुकुरमुत्ते के टुकड़ों को भूल गई थी, जो अभी तक उसके हाथ में ही थे।

"लो अभी ठीक किए लेती हूं अपनी लंबाई!" वह बोली। 'मगर भई, धीरे-धीरे खाऊंगी,' वह अपने आप से बोली। 'नहीं तो कहीं फिर न मेरी ठोडी पंजे से जा लगे!'

वह अपनी घटती हुई लंबाई को गौर से देखती गई। 'अब शायद ठीक हूं, उसने कहा। 'यही तो शायद मेरी असली लंबाई थी। हाय, कैसा अजीब-सा लग रहा है अपने असली कद में आकर। अब जाकर कहीं मैं असली एलिस हो पाई!'

फिर उसने अपने आप से ही, बड़े प्यार से, धीरे-धीरे पूछा, 'हूं न मैं असली एलिस, क्यों?'

'अच्छा, अब मुझे वह बाग ढूंढ निकालना चाहिए,' उसने कहा, 'वही खूबसूरत बाग, जहां सुंदर-सुंदर फूल खिले हुए थे। वह जैसे मुझे दूर से बुला रहे हों। किधर को होगा भला वह?'

उसने ठिठककर एक दफा चारों ओर दूर तक नज़र दौड़ाई। 'वह उधर कौन सा मकान है, छोटा-सा? इस कद में तो मैं वहां जा नहीं सकती। सब लोग डर जाएंगे। बस, उसके लायक जरा छोटी हो जाऊं, फिर चलूं, देखूं!'

(अगले अंक में जारी)

लेखक : लुइस कैरल **प्रस्तुतकर्ता : शमशेर बहादुर सिंह**

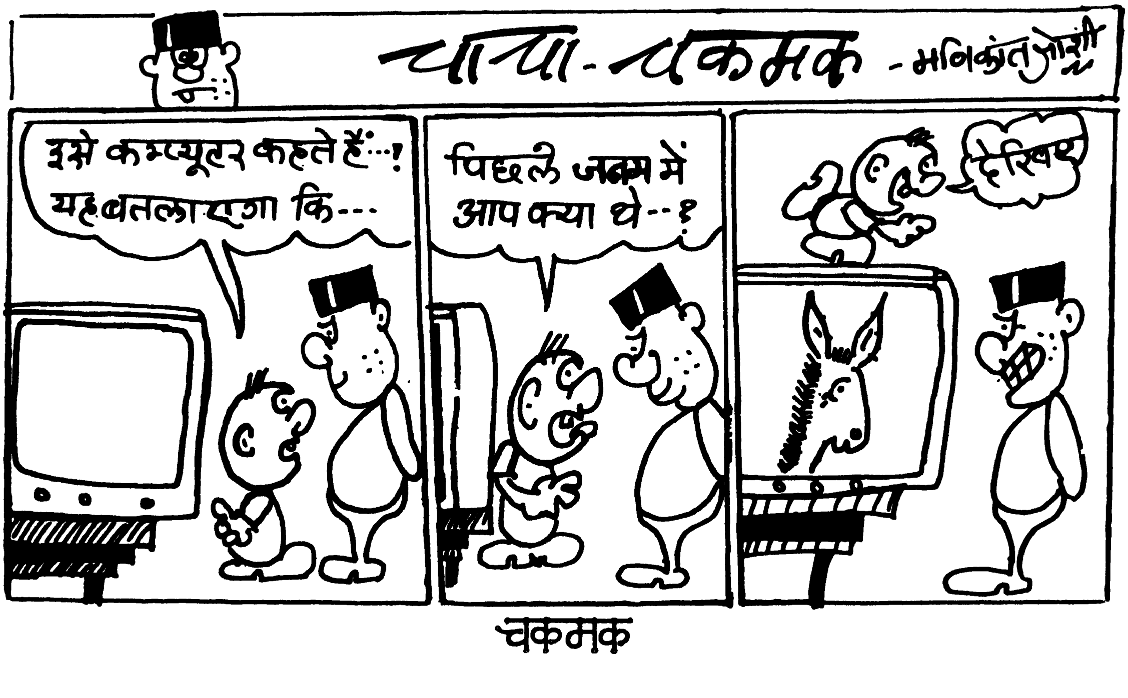

चारू अग्रवाल, भोपाल

इंदरसिंह डावर, आठवीं, ठीकरी खरगोन

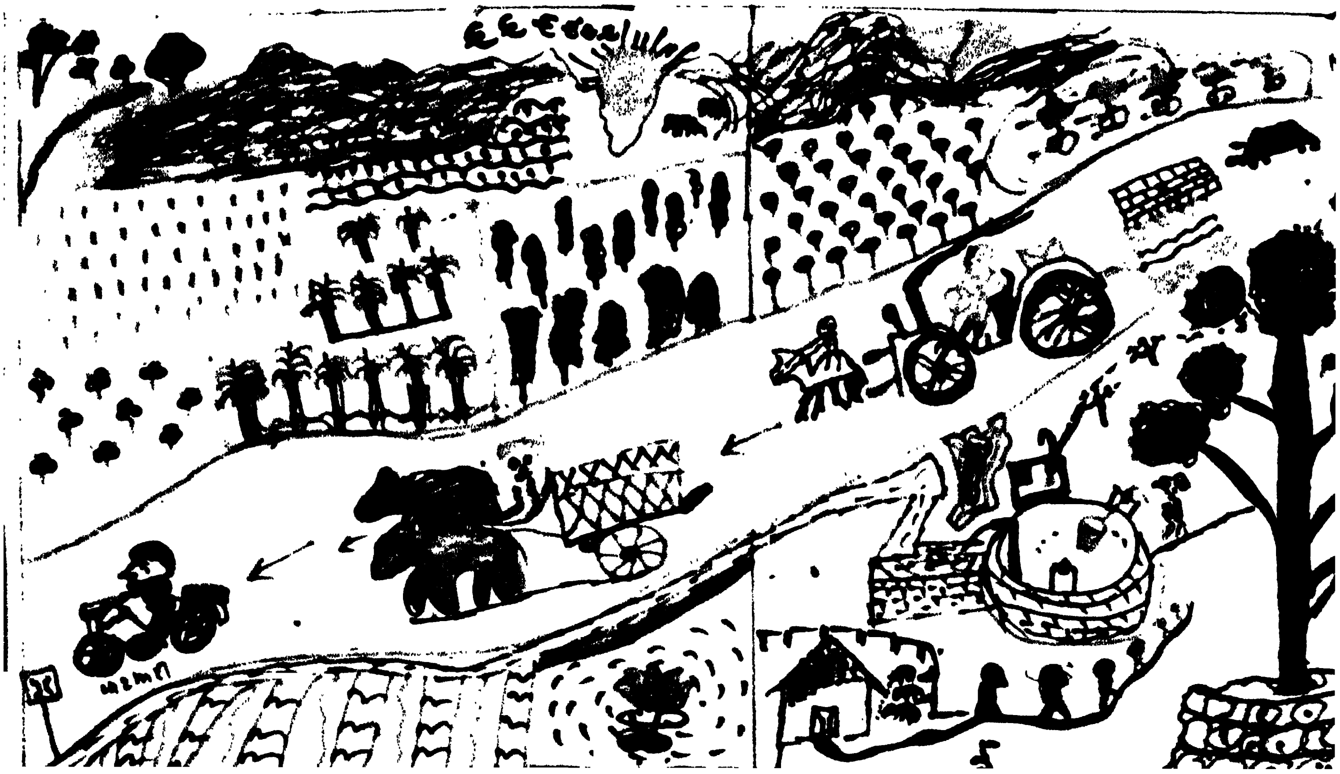

12649